



ક્રમ નંબર : 86

Karamato Faruqe Aa'zam (Gujarati)

કરામાતો

رَضِيَ اللهُ
تَعَالَى عَنْهُ

ફારુકે આઝમ



શીમે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, જાનિયે દા'વો વરવામી, હામતો અલ્યામ મીવાલા અબૂ ઝિયાવ

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અતાર શ્દિરી ૨-૩વી

کتابتیں
المکاتب

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

કિતાબ પઢને કી દુઆ

અઝ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી, હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ દીની કિતાબ યા ઈસ્લામી સબક પઢને સે પહલે ઝૈલ મેં દી હુઈ દુઆ પઢ લીજિયે إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ જો કુછ પઢેંગે યાદ રહેગા. દુઆ યેહ હૈ :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا دَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા : ઐ અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ હમ પર ઈલ્મો હિક્મત કે દરવાઝે ખોલ દે ઓર હમ પર અપની રહમત નાઝિલ ફરમા ! ઐ અ-ઝમત ઓર બુઝુર્ગી વાલે ! (المستطرف ج ١ ص ٤٠١ دار الفكر بيروت)
નોટ : અવ્વલ આખિર એક એક બાર દુરુદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિખે ગમે મદીના
વ બકીઅ
વ મઝિરત



13 શવ્વાલુલ મુકર્રમ 1428 હિ.

કરામાતે ફારુકે આ'ઝમ

યેહ રિસાલા (કરામાતે ફારુકે આ'ઝમ)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી ઝિયાઈ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ને ઉર્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હૈ ઓર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએં તો મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીઅએ મક્તૂબ યા ઈ-મેઈલ SMS) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાખિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

મક-ત-બતુલ મદીના, સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને,
તીન દરવાઝા, અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

કરામાતે ફરમાતે આ'ઝમ¹ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

શૈતાન લાખ સુસ્તી દિલાએ યેહ રિસાલા (47 સફહાત) મુકમ્મલ પઠ લીજિયે
رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ आप अपने दिल में उजरते सख्खिदुना उमर
से जज्जमे अकीदत व महब्बत को हुजूं तर डोता महसूस करमाअंगे.

દુરૂટે પાક કી ફઝીલત

વઝીરે રિસાલત મઆબ, આસ્માને સહાબિય્યત કે દરખ્શાં
માહતાબ, નિઝામે અદ્દલ કે આફતાબે આલમ-તાબ, અમીરુલ મુઅમિનીન,
હઝરતે સખ્ખિદુના ઉમર બિન ખત્તાબ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હેં :
إِنَّ الدُّعَاءَ مَوْقُوفٌ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَا يَصْعَدُ مِنْهُ شَيْءٌ حَتَّى تُصَلِّيَ عَلَيَّ نَبِيٌّ
(صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) યા'ની બેશક દુઆ ઝમીન વ આસ્માન કે દરમિયાન
ઠહરી રહતી હૈ ઓર ઉસ સે કોઈ ચીઝ ઊપર કી તરફ નહીં જાતી જબ તક તુમ
અપને નબિયે અકરમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ પર દુરૂટે પાક ન પઠ લો.

(તૌરુઝી જ ૨૮૧૧ હદિથ ૪૮૧)

1 : યેહ બયાન અમીરે અહલે સુન્નત હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ
ઇલ્યાસ અતાર કાદિરી ર-ઝવી رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ને તબ્લીગે કુરઆનો સુન્નત કી આલમગીર
ગૈર સિયાસી તહરીક દા'વતે ઇસ્લામી કે આલમી મ-દની મર્કઝ ફૈઝાને મદીના બાબુલ
મદીના કરાચી મેં હફતાવાર સુન્નતોં ભરે ઇજતિમાઅ (17-12-09/29 જુલ હિજ્જતિલ
હરામ 1430 સિ.હિ.) મેં ફરમાયા. ઝરૂરી તરમીમ કે સાથ તહરીરન હાઝિરે ખિદમત હે.

-મજલિસે મક-ત-બતુલ મદીના

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुरुदे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रकमते भेजता है. (स्म)

उजरते अल्लामा किफ़ायत अली काफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الشّافِي फ़रमाते हैं :

दुआ के साथ न छोवे अगर दुरुद शरीफ़ न छोवे छर तलक भी भर आ-वरे⁽¹⁾ छाजत

कभूलियत है दुआ को दुरुद के भाईस यह है दुरुद, के साबित करामतो भर-रकत

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

सदासे झरुकी और मुसलमानों की इत्ह याबी

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-भतुल मदीना की

मत्बूआ 346 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "करामाते सहाबा" सफ़हा

74 पर शैभुल उदीस उजरते अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आ'जमी

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ तहरीर फ़रमाते हैं जिस का फुलासा कुछ यूं है : अभीरुल

मुअमिनीन, हामिये दीने मतीन, मुहिब्बुल मुस्लिमीन, गैजुल

मुनाफ़िकीन, इमामुल आदिलीन, उजरते सय्यिदुना उमर झरुके आ'जम

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उजरते सय्यिदुना सारिया رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को अक लश्कर

का सिपह सालार (कमान्डर) बना कर सर जमीने "नडावन्द" में जिहाद

के लिये रवाना फ़रमाया. सिपह सालारे लश्करे इस्लामिया उजरते

सय्यिदुना सारिया رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ कुफ़ारे ना उन्जार से भर सरे पैकार थे

के वज़ीरे रसूले अन्वर उजरते सय्यिदुना उमर रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मस्जिद

न-अविख्यिशशरीफ़ عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के भिम्भरे अत्हर पर फ़ुत्बा

पढते हुअे अयानक इशाद फ़रमाया : "يَا سَارِيَةَ الْجَبَلِ" नी अै सारिया !

पहाड की तरफ़ पीठ कर लो." हाजिरीने मस्जिद हैरान रह गअे के लश्करे

इस्लाम के सिपह सालार उजरते सारिया رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ तो मदीनअे

मुनव्वरह اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا से सेंकडों भील दूर सर जमीने "नडावन्द"

1 : भर आवर का मा'ना है : पूरा छोना.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुइडे पाक पठना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

में मसइके जिहाद हें, आज अभीरुल मुअमिनीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उन्हें क्यूंकर और कैसे पुकारा ? इस उलजान की तशरूफी तब हुई जब वहां से फ़ातेहे नडावन्द हजरते सय्यिदुना सारिया رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का कासिद (या'नी नुमायन्दा) आया और उस ने ખबर दी के मैदाने जंग में कुइरे जइकार से मुकाबले के दौरान जब हमें शिक्स्त के आसार नजर आने लगे, एतने में आवाज आई : “ يَا سَارِيَةُ الْجَبَلِ يا'नी औ सारिया ! पहाड की तरफ़ पीठ कर लो.” हजरते सय्यिदुना सारिया رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरमाया : येह तो अभीरुल मुअमिनीन, खली-इतुल मुस्लिमीन हजरते सय्यिदुना उमर झरुके आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की आवाज है और इर इौरन ही अपने लश्कर को पहाड की तरफ़ पुशत (या'नी पीठ) कर के सइ बन्दी का हुकम दे दिया, इस के बा'द हम ने कुइरे बढ अत्वार पर जोरदार यलगार कर दी तो अेक हम जंग का पांसा पलट गया और थोडी ही देर में इस्लामी लश्कर ने कुइरे बिकार की इौजों को रौंद डाला और असाकिरे इस्लामिया (या'नी इस्लामी इौजों) के काहिराना उभलों की ताब न ला कर लश्करे अशरार मैदाने कारजार से राडे इरार एप्तियार कर गया और अइवाजे इस्लाम ने इत्हे मुभीन का परयम लहरा दिया.¹

मुराद आई मुरादें मिलने की प्यारी घडी आई
मिला हाजत रवा हम को दरे सुल्ताने आलम सा

(जौके ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

¹مدینہ
لَا تَلَايِلُ النَّبُوَّةَ لِلنَّبِيِّ ج ٦ ص ٣٧٠، تاريخ دمشق لابن عساکر ج ٤٤ ص ٣٣٦، تاريخ الخلفاء
ص ٩٩، وشکاة المصابيح ج ٤ ص ٤٠١ حديث ٥٩٥، حجة الله على العالمين ص ٦١٢

करमाने मुस्तफ़ा حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَىٰ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रुहे पाक न पढा तउकीक
वोह बढे भप्ट हो गया. (۱۰۰)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो! अभीरुल मुअमिनीन, झतेहे आ'जम
हजरते सय्यिदुना झाड़के आ'जम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ईस आलीशान
करामत से ईल्मो हिकमत के कई म-दनी कूल युनने को मिलते हैं :
﴿1﴾ अभीरुल मुअमिनीन, मुहिब्बुल मुस्लिमीन, नासिरे दीने मुबीन
हजरते सय्यिदुना उमर झाड़के आ'जम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मदीनअे तय्यिबा
से सेंकडों भील की दूरी पर “नडावन्द” के मैदाने जंग
और उस के अह्वाल व कैफ़ियात को देख लिया और फिर असाकिरे
ईस्लामिया की मुश्किलात का हल भी झौरन लश्कर के सिपह सावार को
बता दिया. ईस से मा'लूम हुआ के अहलुल्हाड की कुव्वते समाअत व
असारत (या'नी सुनने और देखने की ताकत) को आम लोगों की कुव्वते
समाअत व असारत पर हरगिज हरगिज कियास नहीं करना याहिये
बल्के येह अे'तिकाद रभना याहिये के अह्लाड रब्बुल ईज़्जत عَزَّ وَجَلَّ ने
अपने मडभूब अन्हों के कानों और आंभों में आम ईन्सानों से बहुत ही
जियादा ताकत रभी है और उन की आंभों, कानों और दूसरे आ'जा की
ताकत ईस कदर बे भिस्लो बे भिसाल है और उन से जैसे जैसे
कारहाअे नुमायां अन्जाम पाते हैं के जिन को देख कर करामत के सिवा
कुछ भी नहीं कहा जा सकता ﴿2﴾ वजीरे शहन्शाहे नुबुव्वत, रुकने
कस्रे भिल्लत हजरते सय्यिदुना झाड़के आ'जम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की आवाज
सेंकडों भील दूर नडावन्द के मकाम पर पड़ोयी और वहां सब अहले
लश्कर ने उस को सुना ﴿3﴾ जा नशीने रसूले मकबूल, गुलशने सहाबियत
के मडक्ते कूल, अभीरुल मुअमिनीन, हजरते सय्यिदुना उमर बिन

करमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस ने मुज पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढा (उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ायत मिलेगी. (रुतबाएँ)

पत्ताभ **عَزَّ وَجَلَّ** ने **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की **भ-र-कत** से **अद्लाह** **رَبُّهُ** **عَزَّ وَجَلَّ** ने **ईस जंग** में **मुसल्मानों** को **इत्खो नुसरत** **ईनायत** **इरमाई**. (करामाते सडभा, स. 74 तऱ 76, **مَرْقَاةُ الْمَفَاتِيحِ ج 10 ص 296** **تَحْتِ الْحَدِيثِ 0904 مُخْتَصَرًا**, **عَزَّ وَجَلَّ** की **उन पर रडमत** **डो और उन के सडके डमारी** **डे डिसाभ** **मगिइरत** **डो**.

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

किस **ने जरों को डढाया** **और सडरा कर डिया** **किस** **ने कतरों को डिलाया** **और डरिया कर डिया** **किस** **की डिकमत** **ने यतीभों को डिया** **दुरें यतीभ** **और गुलामों को जमाने** **भर का डौला कर डिया** **शौकते** **मगडूर का** **किस शप्स** **ने तोडा** **तिलिस्म** ⁽¹⁾ **मुन्डडिम** ⁽²⁾ **किस** **ने डवाडी ! कसरे** **किसरा** ⁽³⁾ **कर डिया** **صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

सख्यिदुना उमर झरुके आ'उम का तआरुइ

पलीइअे **दुवुम**, **ज** **नशीने** **पैगम्बर**, **वजीरे** **नबिये** **अत्तर**, **डजरते** **सख्यिदुना** **उमर** **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** **की** **कुन्यत** **“अभू डइस”** **और** **लकभ** **“झरुके आ'उम”** **डे**. **अेक** **रिवायत** **में** **डे** **आप** **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** **39** **मडों के** **आ'ड** **आ-तमुल** **मुर-सलीन**, **रडमतुदिलल** **आ-लमीन** **रुसुम** **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** **की** **दुआ** **से** **अे'लाने** **नुबुव्वत** **के** **डटे** **साल** **में** **ईमान** **लाअे**. **आप** **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** **के** **ईस्लाम** **कबूल** **करने** **से** **मुसल्मानों** **को** **डेडड** **पुशी** **डुई** **और** **उन** **को** **बडुत** **बडा** **सडारा** **डिल** **गया** **यडं** **तक** **के** **डुजूर** **रडमते** **आलम** **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** **ने** **मुसल्मानों** **के** **साथ** **डिल** **कर** **ड-रमे** **डोडतरम** **में** **अे'लानिया** **नमाज** **अड** **इरमाई**. **आप** **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** **ईस्लामी** **जंगों** **में** **मुजडडिडाना** **शान** **के** **साथ** **कुइइरे** **ना** **डन्जर** **से** **भर** **सरे** **पैकार** **रडे** **और** **सरवरे** **काअेनात**, **शडन्शाडे** **डौजूडत**

(1) जदू (2) गिराना (3) बाडशाडे ईरान का डडल.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (مهاجرين)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तमाम ईस्लामी तहरीकत और सुलह व जंग वगैरा की तमाम मन्सूबा बन्धियों में वजीर व मुशीर की हैसियत से वफ़ादार व रफ़ीके कार रहे. मोहसिने उम्मत, ખલીફ़એ अव्वल, अमीरुल मुअमिनीन, उजरते सय्यिदुना अबू बक़ सिदीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने भा'द उजरते सय्यिदुना झरुके आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को ખલીફ़ा मुन्ताખબ झरमाया, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने तप्ते खिलाफ़त पर रौनक अफ़रोज़ रह कर ज़ा नशीनिये मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तमाम तर जिम्मे दारियों को ब तरीके अहसन सर अन्जाम दिया.

नमाजे इज्ज में अेक बह बप्त अबू लुअ-लुअ फ़ीरोज़ नामी (मजूसी या'नी आग पूजने वाले) काफ़िर ने आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ पर अन्जर से वार किया और आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ज़म्भों की ताब न लाते हुअे तीसरे दिन श-रफ़े शहादत से मुशरफ़ हो गअे. ब वक़्ते शहादत उम्र शरीफ़ 63 बरस थी. उजरते सय्यिदुना सुहैब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने नमाजे जनाज़ा पढाई और गौहरे नायाब, फ़ैज़ाने नुबुव्वत से फ़ैज़याब, खलीफ़ए रिसालत मआब उजरते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रौज़अे मुबा-रका के अन्धर यकुम मुहर्मुल उराम 24 ख़िज़री एतवार के दिन उजरते सय्यिदुना सिदीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के पडलूअे अन्वर में मदफ़ून हुअे ज़ो के सरकारे अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पडलूअे पाक में आराम झरमा हें.

(الرّياض النضره فى مناقب العشرة ج ١ ص ٢٨٥-٢٨٦-٢٨٧-٢٨٨-٢٨٩ تاريخ الخلفاء ص ١٠٨ وغيره)

अस्लाह व ज़ल्ल व ज़ल्ल की उन पर रहमत हो और उन के सदके उमारी बे खिसाब मग़ि़रत हो.

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर रोज़े जुमुआ दुइद शरीफ़ पढेगा मैं कियामत के दिन उस की शफ़ाअत कइंगे। (क़ुआसिल)

कुर्बे फ़ास

हज़रते सय्यिदुना सिदीके अक़बर और हज़रते सय्यिदुना फ़ाड़के आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को हुन्यवी उयात में ली और बा'द ममात ली सरवरे काअेनात, शह-शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का कुर्बे फ़ास अता किया गया युनान्ये आशिके मुस्तफ़ा, फ़िदाअे जुम्ला सहाबा, मुहिब्बे औलिया व अस्फ़िया शाह एमाम अहमद रज़ा फ़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इरेमाते हैं :

महबूबे रब्बे अर्श है एस सब्ब कुब्बे में पल्लू में जल्वा गाह अतीको उमर की है सा'दैन का किरान है पल्लूअे माह में जुमट किये हें तारे तजल्वी कमर की है⁽¹⁾

किसी और महब्बत वाले ने कहा है :

उयाती में तो थे ही भिदमते महबूबे फ़ालिक में

मज़ार अब है करीबे मुस्तफ़ा फ़ाड़के आ'ज़म का

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

साहिबे करामात

बारगाहे नुबुव्वत से फ़ैज़याब, आस्माने रिफ़अत के दरफ़शां माहताब हज़रते सय्यिदुना उमर बिन फ़त्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ आशिके अक़बर हज़रते सय्यिदुना सिदीके अक़बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के बा'द तमाम

(1) सा'दैन दो सईद सय्यारों के नाम हैं. यहां सा'दैन से मुराद हज़रते सय्यिदुना सिदीके अक़बर और हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ाड़के आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और माह व कमर या'नी या'द रसूले जीशान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और तारे 70 हज़ार मलाअेका है जो मज़ारे पुर अन्वार पर छाअे हुअे हैं.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुज पर दुइदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (البرق)

सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से अफ़जल हैं. आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ साहिबुल करामात और ज़ामिउल इजाईल वल कमालात हैं. रब्बे काअेनात عَزَّ وَجَلَّ ने आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को दीगर भुसूसिख्यात के साथ साथ बहुत सी करामात का ताजे इजीलत दे कर दूसरों से मुमताज़ इरमा दिया.

करामत हक है

उमानअे नुबुव्वत से आज तक कभी भी ईस मस्अले में अडले हक के दरमियान इप्तिलाफ़ नहीं हुवा सभी का मुत्तफ़िका अकीदा है के सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाअे उज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की करामतें हक हैं और हर उमाने में अल्लाह वालों की करामात का सुदूर व जुदूर डोता रहा और إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ कियामत तक कभी भी ईस का सिद्विसला मुन्कतेअ (या'नी अत्म) नहीं डोगा, बल्के डमेशा औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللهُ से करामात सादिर व ज़ादिर डोती रहेंगी.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

करामत की ता'रीफ़

अअ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इन् मअअे इल्मो हुनर डजरते सय्यिहुना उमर रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की मज़ीद यन्द करामात अयान की ज़ाअेंगी मगर पडले "करामत" की ता'रीफ़ सुन लीजिये. युनान्ये दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल क़िताअ "अडारे शरीअत" ज़िल्द अव्वल सफ़हा 58 पर सदरुशशरीअड, अदरुत्तरीकड, डजरते अल्लामा मौलाना मुफ़ती मुडम्मद अमजद अली

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : તુમ જહાં ભી હો મુઝ પર દુરૂદ પઢો કે તુમ્હારા દુરૂદ મુઝ તક પહોંચતા હૈ. (ખૂર્શી)

આ'ઝમી **“કરામત”** કી તારીફ કુદૃષ્ટિ ઈસ તરહ બયાન ફરમાતે હૈ: **“વલી સે જો બાત ખિલાફે આદત સાદિર હો ઉસ કો “કરામત” કહતે હૈ.”** (બહારે શરીઅત)

અફઝલુલ ઔલિયા

ઉ-લમા વ અકાબિરીને ઈસ્લામ **رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام** કા ઈસ પર ઈતિફાક હૈ કે તમામ સહાબએ કિરામ **رَضْوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن** **“અફઝલુલ ઔલિયા”** હૈ, કિયામત તક કે તમામ ઔલિયાઉલ્લાહ **رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ** અગર્યે દ-ર-જએ વિલાયત કી બુલન્દ તરીન મન્જિલ પર ફાઈઝ હો જાએ મગર હરગિઝ હરગિઝ વોહ કિસી સહાબી **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ** કે કમાલાતે વિલાયત તક નહીં પહોંચ સકતે. અલ્લાહ રબ્બુલ ઈઝ્ઝત **عَزَّ وَجَلَّ** ને મુસ્તફા જાને રહમત, શમ્એ બઝમે રિસાલત, નોશએ બઝમે જન્નત **رَضْوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** કે ગુલામોં કો વિલાયત કા વોહ બુલન્દો બાલા મકામ ઈનાયત ફરમાયા ઔર ઈન મુકદ્દસ હસ્તિયોં **رَضْوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن** કો ઐસી ઐસી અઝીમુશ્શાન કરામતોં યા'ની બુઝુર્ગિયોં સે સરફરાઝ કિયા કે દૂસરે તમામ ઔલિયાએ કિરામ **رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام** કે લિયે ઈસ મે'રાજે કમાલ કા તસવ્વુર ભી નહીં કિયા જા સકતા. ઈસ મેં શક નહીં કે હઝરાતે સહાબએ કિરામ **رَضْوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن** સે ઈસ કદર ઝિયાદા કરામતોં કા તઝકિરા નહીં મિલતા જિસ કદર, કે દૂસરે ઔલિયાએ કિરામ **رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام** સે કરામતેં મન્કૂલ હૈ. યેહ વાઝેહ રહે કે કસ્તે કરામત, અફઝલિય્યતે વિલાયત કી દલીલ નહીં કયૂંકે વિલાયત દર હકીકત કુર્બે બારગાહે અ-હદિથ્યત **عَزَّ وَجَلَّ** કા નામ હૈ ઔર યેહ કુર્બે ઈલાહી **عَزَّ وَجَلَّ** જિસ કો જિસ

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर इस मरतबा दुइडे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रलभते नाजिल करमाता है. (गुरान)

કદર ઝિયાદા હાસિલ હોગા ઉસી કદર ઉસ કા દ-ર-જએ વિલાયત બુલન્દ સે બુલન્દ તર હોગા. સહાબએ કિરામ رَضْوَانُ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ચૂંકે નિગાહે નુબુવ્વત કે અન્વાર ઔર ફેઝાને રિસાલત કે ફુયૂઝો બ-રકાત સે મુસ્તફીઝ હુએ, ઈસ લિયે બારગાહે રબ્બે લમ યઝલَّ عَزَّ وَجَلَّ મેં ઈન બુરુઝોં કો જો કુર્બ વ તકરુબ હાસિલ હૈ વોહ દૂસરે ઔલિયાઉલ્લાહ رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ કો હાસિલ નહીં. ઈસ લિયે અગર્યો સહાબએ કિરામ رَضْوَانُ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ સે બહુત કમ કરામતેં મન્કૂલ હુઈ લેકિન ફિર ભી ઉન કા દ-ર-જએ વિલાયત દીગર ઔલિયાએ કિરામ رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام સે હદ દ-રજા અફઝલો આ'લા ઔર બુલન્દો બાલા હૈ.

સરકારે દો આલમ સે મુલાકાત કા આલમ આલમ મેં હૈ મે'રાજે કમાલાત કા આલમ યેહ રાઝી ખુદા સે હૈં ખુદા ઈન સે હૈં રાઝી કયા કહિયે સહાબા કી કરામાત કા આલમ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

દરિયાએ નીલ કે નામ ખત

દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મતબૂઆ 192 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ “સવાનેહે કરબલા” સફહા 56 તા 57 પર સદરુલ અફઝિલ હઝરતે અલ્લામા મૌલાના સય્યિદ મુહમ્મદ નઈમુદીન મુરાદઆબાદી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي તહરીર ફરમાતે હૈં :
જિસ કા ખુલાસા કુછ યૂં હૈ : જબ મિસ્ર ફત્હ હુવા તો એક રોઝ અહલે મિસ્ર ને હઝરતે સય્યિદુના અમ્ર બિન આસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ સે અઝ્ઝ કી :
ઐ અમીર ! હમારે દરિયાએ નીલ કી એક રસ્મ હૈ જબ તક ઉસ કો અદા ન કિયા જાએ દરિયા જારી નહીં રહતા. ઉન્હોં ને ઈસ્તિફસાર ફરમાયા :
કયા ? કહા : હમ એક કંવારી લડકી કો ઉસ કે વાલિદૈન સે લે કર ઉમ્દા

इरमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस के पास मेरा ठिक छो और वोड मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोड लोगो में से कजूस तरीन शप्स है. (तैरिब)

लिबास और नईस जेवर से सजा कर दरियाअे नील में डालते हैं. डउरते सय्यिदुना अम्र बिन आस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरमाया : ईस्लाम में हरगिज ऐसा नहीं हो सकता और ईस्लाम पुरानी वाडियात रस्मों को मिटाता है. पस वोड रस्म मौकूफ़ रपी (या'नी रोक दी) गई और दरिया की रवानी कम होती गई यहां तक के लोगो ने वहां से यले जाने का कस्द (या'नी इरादा) किया, येड देप कर डउरते सय्यिदुना अम्र बिन आस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अभीरुल मुअमिनीन जलीफ़अे सानी डउरते सय्यिदुना उमर बिन अताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की बिदमत में तमाम वाकिया लिप भेजा, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने जवाब में तहरीर इरमाया : तुम ने ठीक किया बेशक ईस्लाम ऐसी रस्मों को मिटाता है. मेरे इस पत में अेक रुक़आ है इस को दरियाअे नील में डाल देना. डउरते सय्यिदुना अम्र बिन आस रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास जब अभीरुल मुअमिनीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का पत पलोंया और उन्हों ने वोड रुक़आ उस पत में से निकाला तो उस में लिपा था : “(अे दरियाअे नील !)

अगर तू खुद जारी है तो न जारी हो और अद्लाड तआला ने जारी इरमाया तो मैं वाडिदो कडुडार عَزَّوَجَلَّ से अर्ज गुजार हूं के तुजे जारी इरमा दे.” डउरते सय्यिदुना अम्र बिन आस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने येड रुक़आ दरियाअे नील में डाला अेक रात में सोलह¹⁶ गज पानी बढ गया और येड रस्म भिस्स से बिडकुल मौकूफ़ (या'नी पत्म) हो गई.

(العظمة لابی الشيخ الاصبهانی ص ۳۱۸ رقم ۹۶۰)

याहें तो ईशारों से अपने, काया डी पलट दें दुन्या की येड शान है बिदमत गारों की, सरदार का आलम क्या डोगा

करमाने मुस्तङ्क: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: उस शप्स की नाक पाक आलूद छो जिस के पास मेरा जिंक छो और वो छ
मुज पर दुइडे पाक न पढे. (एम)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! ईस रिवायत से मा'लूम हुवा के अभीरुल मुअमिनीन उठरते सय्यिदुना उमर झरुके आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की हुकमरानी का परयम दरियाओं के पानियों पर भी लहरा रहा था और दरियाओं की रवानी भी आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की ना इरमानी नहीं करती थी. निगाहे नुबुव्वत से कैओ ब-र-कत याइता, बारगाहे रिसालत से ता'लीमो तरबियत याइता उठरते सय्यिदुना उमर बिन ખતાब عَزَّ وَجَلَّ के हुस्ने ईमान की ब-र-कात थीं, रब्बे काओनात ने अहले भिस्स को ईस भुरी रस्म से नजात अता इरमाई.

उम ने तकसीर की आदत कर ली आप अपने पे कियामत कर ली
में यला ही था मुझे रोक दिया मेरे अल्लाह ने रहमत कर ली

(जौके ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ना ज़ाह्य रस्मो रवाज और मुसल्मानों की हालते मार

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! जिस तरह अहले भिस्स में दरियाओ नील को ज़ारी रबने के लिये रस्मे बट ज़ारी थी ईसी तरह दौरे हाज़िर में भी बा'उ कबीह और ना ज़ाह्य रुसूमात जोर पकडती ज़ा रही हैं और येह पिलाई शर-अ रुसूमात मुसल्मानों को पस्ती व बरबादी के अभीक गढे की तरफ़ धकेलती और सुन्नते रसूलुल्लाह से दूर करती यली ज़ा रही हैं. दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 170 सङ्घात पर मुशतमिल अेक ज़बर दस्त किताब "ईस्लामी जिन्दगी" सङ्घा 12 ता 16 पर मुइस्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत उठरते मुइती अहमद यार पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ ने भुरी रुसूमात और मुसल्मानों के

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होगे. (कोरान)

बिगडे हुअे डालात की जो कुछ केफ़िय्यात बयान इरमाई हैं उन का भुलासा कुछ यूं है : आज कौन सा दई रभने वाला दल है जो मुसल्मानों की मौजूदा पस्ती और इन की मौजूदा ज़िल्लतो प्वारी और नादारी पर न दुभता हो और कौन सी आंभ है जो इन की गुरभत, मुफ़िलसी, बे रोजगारी पर आंसू न बछाती हो ! हुकूमत इन से छिनी, दौलत से येह मडरूम हुअे, ईज़्जतो वकार इन का भत्म हो युका, जमाने त्तर की मुसीबत का शिकार मुसल्मान बन रहे हैं, इन डालात को देख कर क्लेशा मुंड को आता है, मगर दोस्तो ! इकत राने धाने से काम नही चलता बढे ज़री येह है के इस के ईलाज पर गौर किया जाअे. ईलाज के लिये यन्द थीजें सोयनी याहिएं (1) अस्ल भीमारी क्या है ? (2) इस की वजह क्या ? मरज क्यूं पैदा हुवा ? (3) इस का ईलाज क्या है ? (4) इस ईलाज में परहेज क्या क्या है ? अगर इन यार⁴ बातों में गौर कर लो तो समज लो के ईलाज आसान है. कई लीडराने कौम और पेशवायाने मुल्क ने अक्वामे मुस्लिम के ईलाज का बीडा उढाया मगर नाकामी ही मिली और अद्लाह عَزَّوَجَلَّ के जिस किसी नेक बन्दे ने मुसल्मानों को उन का सहीह ईलाज बताया तो बा'ज नादान मुसल्मानों ने उस का मजाक उढाया, उस पर इब्तियां कसीं, जमाने ता'न दराज की, ग-रजे के सहीह तबीबों की आवाज पर कान न धरा.

मुसल्मानों की बादशाहत गई, ईज़्जत गई, दौलत गई, वकार गया, सिर्फ़ ओक वजह से वोह येह के डम ने शरीअते मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की पैरवी छोड दी, डमारी ज़िन्दगी ईस्लामी ज़िन्दगी न रही. इन तमाम नुडूसतों की वजह येह है के डमें अद्लाह عَزَّوَجَلَّ का

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुज पर दुइडे शरीफ़ पढे अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा. (अहमदी)

भौफ़, नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शर्म और आभिरत का डर न रहा. आ'ला हजरत, मुजद्विदे दीनो मिल्लत عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى कहते हैं :

दिन लइव¹ में भोना तुजे शब सुबह तक सोना तुजे

शर्म नबी, भौफ़े भुदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं

(हदाईके अफ़िश)

मस्जिदें हमारी वीरान, मुसल्मानों से सिनेमा व तमाशे आबाद, हर किस्म के उयूब मुसल्मानों में मौजूद, ना ज़रूर रस्में हम में काँधम हैं, हम किस तरह ठज़्ज़त पा सकते हैं ! जैसे किसी ने कहा है :

वाये नाकामी ! मताये कारवां जता रहा

कारवां के दिल से अहसासे जियां जता रहा

3 बीमारियां

मुसल्मानों की असल बीमारी तो अहकामे भुदा व सुन्नते मुस्तफ़ा को छोडना है, अब इस मरज की वजह से और बहुत सी बीमारियां पैदा हो गयीं. मुसल्मानों की बडी बडी तीन³ बीमारियां हैं : अव्वल रोज़ाना नये नये मज़्ज़हों की पैदावार और हर आवाज़ पर मुसल्मानों का आंभें बन्द कर के चल पडना. दूसरे, मुसल्मानों की आपस की ना याकियां, अदावतें और मुकद्दमा बाजियां. तीसरे, ज़हिल लोगों की घडी दुई भिलाफ़े शर-अ या कुज़ूल रस्में, इन तीन किस्म की बीमारियों ने मुसल्मानों को तबाह कर डाला, अरबाद कर दिया, घर से बे घर बना दिया, मक़्ज़ुल कर दिया ग-रजे के जिल्लत के गढे में धकेल दिया.

1: फेलकूद

करमाने मुस्तका صلى الله تعالى عليهم و آله وسلم : मुज पर कसरत से दुरेद पाक पढे बेशक तुम्हारा मुज पर दुरेद पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मङ्कित है. (बुखारी)

मजहुरा बीमारियों का धलाज

पहली बीमारी का धलाज येह है के हर बढ मजहब की सोडभत से बयो, उस आदिमे लक और सुन्नियुल मजहब शप्स के पास बैठो जिस की सोडभते हैज असर से सरकारे मदीना, करारे कल्बो सीना, हैज गन्जना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का धशक और धत्तिभाये शरीअत का जजभा पैदा हो.

दूसरी बीमारी का धलाज येह है के अक्सर झितना व इसाद की जड हो थीजें हैं : अक गुस्सा और अपनी बडाध और दूसरे लुकूके शरधय्या से गइलत. हर शप्स याहता है के मैं सभ से ठीया रहूं और सभ मेरे लुकूक अदा करें मगर मैं किसी का लक अदा न करूं अगर हमारी तबीअत में से गुजर व तकब्बुर निकल जाये, आजिजी और तवाजोअ पैदा हो जाये, हम में से हर शप्स दूसरे के लुकूक का भयाल रभे तो كَلْبِيَّ لَمَّا جَزَعَهُ كَلْبِيَّ كَلْبِيَّ كَلْبِيَّ كَلْبِيَّ كَلْبِيَّ كَلْبِيَّ كَلْبِيَّ कभी जगडे की नौभत ही न आये.

तीसरी बीमारी येह है के हमारे अक्सर मुसल्मानों में बय्ये की पैदाधश से ले कर मरने तक मुप्तलिफ मौकओं पर ऐसी तभाड कुन रस्में जारी हैं जिन्हों ने मुसल्मानों की जडें भोभली कर दी हैं. शादी भियाड की रस्मों की बढौलत लजारों मुसल्मानों की जायेदादें, मकानात, दुकानें सूदी कर्जे में यली गध और बहुत से आ'ला भानदानों के लोग आज किराये के मकानों में गुजर कर रहे हैं और ठोकरें भाते झिरते हैं. अपनी कौम की धस मुसीबत को देभ कर मेरा दिल् लर आया, तबीअत में जोश पैदा हुवा के कुछ भिदमत करूं. रोशनाध के यन्द कतरे लकीकत में मेरे आंसूओं के कतरे हैं, भुदा करे के धस से कौम की धस्लाड हो जाये, मैं

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ज़ो मुज़ पर अक दुइद शरीफ़ पढता है अल्लाह उंस के लिये अक कीरात अज्र लिअता है और कीरात उडुद पडाउ जितना है. (मुराज़)

ने येह महसूस किया के बहुत से लोग एन शादी बियाह और दीगर कुजूल रस्मों से बेजार तो हैं मगर बरादरी के ता'नों और अपनी नाक कटने के भौंफ़ से जिस तरह हो सकता है कर्ज ले कर एन जाहिलाना रस्मों को पूरा करते हैं. कोई तो औसा मर्दे मुजाहिद हो ज़ो बिला भौंफ़ो अतर हर अक के ता'ने बरदाश्त कर के तमाम ना ज़ाँज व हराम रस्मों पर लात मार दे और सुन्नते सरवरे काओनात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को जिन्दा कर के दिआ दे के ज़ो शप्स सुन्नत को जिन्दा करे उस को 100 शहीदों का सवाब मिलता है. क्यूंके शहीद तो अक दफ़आ तलवार का ज़भ्म भा कर दुन्या से पर्दा कर जाता है मगर येह अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का नेक बन्दा उअ्र त्बर लोगों की ज़बानों के ज़भ्म भाता रहता है. वाजेह रहे के मुरव्वज रस्में दो किस्म की हैं : अक तो वोह ज़ो शरअन ना ज़ाँज हैं. दूसरी वोह ज़ो तबाह कुन हैं और बहुत दफ़आ उन के पूरा करने के लिये मुसल्मान सूदी कर्ज की नुहूसत में भी मुअ्तला हो जाता है. डालांके सूद का लैन टैन गुनाहे कबीरा है और यूं येह रुसूमात बहुत सारी आफ़ात में इंसा देती हैं, एन से दूरी ही में आइय्यत है. (इस्लामी जिन्द्गी, स. 12 ता 16 अ तसरुफ़)

(गलत व कबीह रुसूमात के नुकसानात जानने और एन के एलाज की तफ़सीली मा'लूमात हासिल करने के लिये “मक-त-अतुल मदीना” की किताब “इस्लामी जिन्द्गी” उदिय्यतन हासिल कर के मुता-लआ इरमाएये)

शादियों में मत गुनाह नादान कर पाना बरबादी का मत सामान कर
छोड दे सारे गलत रस्मो रवाज सुन्नतों पर चलने का कर अइद आज
भूष कर जिके भुदा व मुस्तफ़ा दिल मदीना उन की यादों से बना

(वसाएले अफ़िश, स. 670)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुइडे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरशते उस के लिये ईस्तिग़ार करते रहेंगे. (पुन.)

कभ्र वाले से गुफ्त-गू

मुदआओ रसूल, रकीके रसूल, मुशीरे रसूल, जं निसारे रसूल, अमीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना उमर झरुके आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ एक बार एक सालेह (या'नी नेक परहेज गार) नौ जवान की कभ्र पर तशरीफ़ ले गओ और इरमाया : **أَيُّ كُفُلًا ! اذَّلَا اذَّ وَجَلَّ عَزَّ وَجَلَّ** ने वा'दा इरमाया है :

وَلَسَنُ حَافٍ مَقَامَ رَبِّهِ

तर-ज-मओ क-जुल ईमान : और जो

(प २७, الرحمن: ६६)

جَنَّتِنِ

अपने रब के हुजूर अडे डोने से उरे उस के लिये दो जन्नतें हैं.

ओ नौ जवान ! बता ! तेरा कभ्र में क्या डाल है ? उस सालेह (या'नी बा अमल) नौ जवान ने कभ्र के अन्दर से आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का नाम ले कर पुकारा और ब आवाजे बुलन्द हो² मर्तबा जवाब दिया : **فَدَا عَطَانِيهِمَا رَبِّي عَزَّ وَجَلَّ فِي الْجَنَّةِ**. अता इरमा दी हैं. (तاريخ دمشق لابن عساکر ج ६० ص ६०). उन पर रहमत हो और उन के सदके डमारी बे डिसाब भगिरेत हो.

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

दे अडरे उमर अपना उर या ईलाडी

दे ईशके शडे अडरो अर या ईलाडी

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दूरेदे पाक पढा अदलाह. عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रलभते भेजता है. (मुसल्ल)

કયા શાન હૈ ફારૂકે આ'ઝમ હઝરતે સચ્ચિદુના ઉમર عَزَّوَجَلَّ આ પ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ કી કે બ અતાએ રબ્બે અકબાર عَزَّوَجَلَّ આ પ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ને અહલે કબ્ર કે અહવાલ મા'લૂમ કર લિયે. ઈસ રિવાયત સે યેહ ભી પતા ચલા કે જો શખ્સ નેકિયોં ભરી ઝિન્દગી ગુઝારેગા ઓર ખોંકે ખુદા عَزَّوَجَلَّ સે લરઝાં વ તરસાં રહેગા, બારગાહે ઈલાહી عَزَّوَجَلَّ મેં ખડા હોને સે ડરેગા, વોહ અલ્લાહુ રબ્બુલ ઉલા عَزَّوَجَلَّ કી રહમતે કામિલા સે દો જન્નતોં કા હકદાર કરાર પાએગા. જવાની મેં ઈબાદત કરને ઓર ખોંકે ખુદા عَزَّوَجَلَّ રખને વાલોં કો મુબારક હો કે બરોઝે કિયામત જબ સૂરજ એક મીલ પર રહ કર આગ બરસા રહા હોગા, સાયએ અર્શ કે ઈલાવા ઉસ જાં-ગુઝા (યા'ની જાન કો તક્લીફ મેં ડાલને વાલી) ગરમી સે બચને કા કોઈ ઝરીઆ ન હોગા તો અલ્લાહુ રહમાન عَزَّوَجَلَّ ઐસે ખુશ કિસ્મત મુસલ્માન કો અપને અર્શ પનાહ ગાહે અહલે ફર્શ કા સાયએ રહમત ઈનાયત ફરમાએગા જૈસા કે

સાયએ અર્શ પાને વાલે ખુશ નસીબ

દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ 88 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ “સાયએ અર્શ કિસ કિસ કો મિલેગા ?” સફહા 20 પર હઝરતે સચ્ચિદુના ઈમામ જલાલુદ્દીન સુયૂતી શાફેઈ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكافِي નકલ ફરમાતે હેં : હઝરતે સચ્ચિદુના સલમાન رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ને હઝરતે સચ્ચિદુના અબુદરદા عَزَّوَجَلَّ કી તરફ ખત લિખા કે ઈન સિફાત કે હામિલ મુસલ્માન અર્શ કે સાએ મેં હોંગે :

करमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जो शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (قرآن)

(उन में से दो येह हें) (1)..... वोह शप्स जिस की नशवो नुमा इस डाल में हुई के उस की सोडभत, जवानी और कुवत अल्लाहु रब्बुल ईज़्जत عَزَّوَجَلَّ की पसन्द और रिजा वाले कामों में सई हुई और (2)..... वोह शप्स जिस ने अल्लाहु عَزَّوَجَلَّ का जिक्र किया और उस के भौंके से उस की आंभों से आंसू बह निकले.

(مُصَنَّفُ ابْنِ أَبِي شَيْبَةَ ج ٨ ص ١٧٩ حَدِيث ١٢)

या रब ! में तेरे भौंके से रोता रहूं डर हम

दीवाना शह-शाहे मदीना का बना हे

(वसाईले बख्शिश, स. 110)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

अयानक दो शेर आ पढीये

डजरते सय्यिदुना उमर झड़के आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को ओक शप्स हूंड रहा था, किसी ने बताया के कहीं आभादी के बाहर सो रहे होंगे. वोह शप्स आभादी के बाहर निकल कर आप को तलाश करने लगा यहाँ तक के डजरते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को इस डालत में पाया के आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ सर के नीचे दुरा रभे हुअे जमीन पर सो रहे थे, उस ने नियाम से तलवार निकाली और वार करना ही याहता था के गैब से दो² शेर नुमूदार हुअे और उस की तरफ़ बढे, येह मन्जर देण कर वोह यीभ पडा, उस की आवाज से डजरते सय्यिदुना उमर झड़के आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बेदार हो गअे, उस ने अपना सारा वाकिआ बयान किया और आप के दस्ते डक परस्त पर मुसल्मान हो गया.

(تفسير كيبيرج ٧ ص ٤٣٣)

करमाने मुस्तफ़ा: حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइडे पाक न पढा तडकीक वोड बढ भुप्त हो गया. (उज)

घर वालों को तहजुद के लिये जगाते

उजरते सख्यिदुना ँबने उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا रिवायत करते हैं के ँन के वालिदे माजिद उजरते सख्यिदुना झरुके आ'जम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रात को उठ कर नमाजें अदा करमाते, ँस के बा'द जब रात का आधिरी वक्त आ जाता तो अपने घर वालों को बेदार कर के करमाते के नमाज पढे. फिर येड आयते मुबा-रका तिलावत करते :

وَأُمْرًا هَلَكًا بِالصَّلَاةِ وَأَصْطَبِرُ
عَلَيْهَا لَا تَسْأَلُكَ بِرُزْقًا نَحْنُ
نَرُزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَى ۝

(१३२:५७-१७५)

तर-ज-मअे क-जुल ँमान : और अपने घर वालों को नमाज का हुकम दे और जुद ँस पर साबित रह कुछ डम तुज से रोजी नही मांगते डम तुजे रोजी देंगे और अ-जम का भला परहेज गारी के लिये.

(مَوْطًا امام مالك ج ۱ ص ۱۲۳ حديث ۲۶۰)

अमीरुल मुअमिनीन, ँमामुल आदिलीन, उजरते सख्यिदुना उमर झरुके आ'जम रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के नमाजियों की ँबर गीरी करने की अेक रिवायत और मुला-उजा करमाँये नीज ँस के मुताबिक अमल का जेहन बनाँये युनान्थे अमीरुल मुअमिनीन झरुके आ'जम रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सुब्ड की नमाज में उजरते सख्यिदुना सुलैमान बिन अबी उस्मा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को नही देभा. बाजार तशरीफ़ ले गअे, रास्ते में सख्यिदुना सुलैमान रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का घर था उन की मां उजरते सख्यि-दतुना शिफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास तशरीफ़ ले गअे और करमाया के सुब्ड की नमाज में मैं ने सुलैमान को नही पाया ! उन्हों ने कडा : रात में नमाज (या'नी नफ़लें) पढते रहे फिर नीद आ गँ, सख्यिदुना उमर

इरमाने मुस्तक़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार इरुके पाक पढा अल्लाह उस पर दस रउमतें भेजता है. (१)

इरुके आ'उम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरमाया : सुभ्र की नमाज जमाअत से पढूं येह मेरे नजदीक ईस से बेहतर है के रात में किया कइं. (या'नी रात भर नइलें पढूं)

(موطأ امام مالك ج ۱ ص ۱۳۴ حديث ۳۰۰)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! सय्यिदुना उमर इरुके आ'उम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने घर जा कर ખबर निकाली, ईस रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा के शब भर नवाइल पढने या ईजतिमाअे जिको ना'त या सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में रात गअे तक शिर्कत करने के सभब सुभ्र की नमाज कजा हो जाना कुजा अगर इज की जमाअत भी यली जाती हो तो लाजिम है के ईस तरह के मुस्तहब्बात छोड कर रात आराम कर ले और बा जमाअत नमाजे इज अदा करे.

महबूबे इरुके आ'उम

इरमाने इरुके आ'उम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ : मुजे वोह शप्स महबूब (या'नी प्यारा) है जो मुजे मेरे अब बताअे. (الطبقات الكبرى لابن سعد ج ۳ ص ۲۲۲)

शहूद का पियाला

इउरते सय्यिदुना उमर इरुके आ'उम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की खिदमत में शहूद का पियाला पेश किया गया, उसे अपने हाथ पर रख कर तीन³ मर्तबा इरमाया : “अगर मैं ईसे पी लूं तो ईस की हलावत (या'नी लज़्जत व मिठास) खत्म हो जाअेगी मगर हिसाब बाकी रह जाअेगा.” इर आप ने किसी और को दे दिया. (الزهد لابن المبارك ص ۲۱۹)

इानी दुन्या का नुकसान बरदाश्त कर लिया करो

अमीरुल मुअमिनीन, इउरते सय्यिदुना उमर इरुके आ'उम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : मैं ने ईस बात पर गौर किया है के जब दुन्या

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : श्री शप्स मुउ पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोड जन्तत का रास्ता भूल गया. (طريق)

का ईरादा करता हूँ तो आभिरत का नुकसान होता नजर आता है और जब आभिरत का ईरादा करता हूँ तो दुन्या को नुकसान महसूस होता है यूँके मुआ-मला ही ईसी तरह का है लिहाजा तुम (आभिरत का नहीं बल्के) फ़ानी दुन्या का नुकसान बरदाश्त कर लिया करो. (अरुहद للامام احمد ص १०२)

झरुके आ'उम का रोना

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! महबूबे जनाबे सादिको अमीन, सय्यिदुल फ़ाईडीन, अमीरुल मुअमिनीन, उजरते सय्यिदुना उमर झरुके आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ कर्छी जन्तती डोने के भा वुजूद भौङ्के फ़ुदा عَزَّ وَجَلَّ से गिर्या कुनां रहते बल्के भशिय्यते ईलाही عَزَّ وَجَلَّ से रोने के सभभ आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के येइरअे पुर अन्वार पर दो सियाह लकीरें पड गई थीं युनान्चे दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्भूआ 695 सङ्घात पर मुश्तमिल किताब "अद्लाह वालों की भातें" जिहद अक्वल, सङ्घा 123 पर उजरते सय्यिदुना उमर झरुके आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की पाकीजा जिन्दगी के अेक हसीन और लाईके तकलीद गोशे का जिक है : उजरते अब्दुद्लाह बिन ईसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से रिवायत है के साहिबे भौङ्को भशिय्यत, नजमे राहे हिदायत, मम्भअे ईल्मो हिकमत उजरते सय्यिदुना उमर झरुके आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के येइरअे अकदस पर बहुत जियादा रोने की वजह से दो² काली लकीरें पड गई थीं. (अरुहद للامام احمد بن حنبل ص १६९)

रोने वाली आंभें मांगो रोना सभ का काम नहीं

जिके महबूबत आम है लेकिन सोजे महबूबत आम नहीं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदुइ पाक न पढा तबकीक वोह बढ भुप्त हो गया. (अबु) (अबु)

पुढ को अताब से डराने का अनोखा तरीका

उजरते सय्यिदुना हसन असरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي इरमाते हैं :
उजरते सय्यिदुना उमर बिन अताब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अस्रा अवकात आग के करीब हाथ ले जाते फिर अपने आप से सुवाल इरमाते : औ अताब के भेटे ! क्या तुज में येह आग बरदाशत करने की ताकत है ?

(مناقب عمر بن الخطاب لابن الجوزى ص ۱۰۴)

बकरी का बय्या भी मर गया तो.....

अमीरुल मुअमिनीन, उजरते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, अलिय्युल मुर्तजा, शेरे पुढा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم इरमाते हैं : मैं ने अमीरुल मुअमिनीन, उजरते सय्यिदुना उमर बिन अताब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को देभा के गिंट पर सुवार हो कर बहुत तेजी से जा रहे हैं, मैं ने कडा : या अमीरुल मुअमिनीन ! कहां तशरीफ़ ले जा रहे हैं ? जवाब दिया : स-दके का अेक गिंट भाग गया है उस की तलाश में जा रहा हूं, अगर दरियाअे फिरात के कनारे पर बकरी का अेक बय्या भी मर गया तो बरोजे कियामत उमर से इस के बारे में पूछगछ होगी. (ایضاً ص ۱۰۳)

जहन्नम को बकसरत याद करो

उजरते सय्यिदुना झाड़के आ'जम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इरमाया करते थे : जहन्नम को बकसरत से याद करो क्यूंके इस की गरमी निहायत सप्त और गहराई बहुत जियादा है और इस के गुर्ज या'नी उथोडे लोडे के हैं.

(जिन से मुजरिमों को मारा जायेगा)

(ترمذی ج ۴ ص ۲۶۰ حدیث ۲۰۸۴)

करमाने मुस्तफ़ा: عَسَى اللّٰهُ تَعَالَىٰ غَفِيْرٌ رَّحِيْمٌ : जिस ने मुज पर दस मरतबा सुबुह और दस मरतबा शाम दुइदे पाक पढा
 उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्राअत मिलेगी. (अ.श.उ.)

लोगों की छज्जत से बैतुल माल से शहूद लेना

हउरते सय्यिदुना इाउके आ'उम ऱुसुय़ी अल्लु त़ाली अँनु अेक बार भीमार हुअे, तभीभों ने ँलाज में शहूद तजवीज क्रिया, बैतुल माल में शहूद मौजूद था लेकिन मुसल्मानों की छज्जत के बिगैर लेने पर राजी न थे, युनान्ये ँसी ढालत में मस्जिद में ढाजिर हुअे और मुसल्मानों को जम्अ कर के छज्जत तलब की, जब लोगों ने छज्जत दी तो ँस्ति'माल इरमाया.

(طبقات ابن سعد ج 3 ص 209)

मुसल्सल रोउे रभते

हउरते सय्यिदुना ँबने उमर ऱुसुय़ी अल्लु त़ाली अँनु इरमाते हैं : हउरते सय्यिदुना उमर इाउके आ'उम ऱुसुय़ी अल्लु त़ाली अँनु विसाल से दो² साल तक लगातार रोउे रभते रहे. दूसरी रिवायत में है : ब-करह ँद व ँदुल क्रिा और सफ़र के ँलावा हउरते सय्यिदुना उमर इाउके आ'उम ऱुसुय़ी अल्लु त़ाली अँनु मुसल्सल रोउे रभते थे.

(مناقب عمر بن الخطاب لابن الجوزي ص 160)

सात या नव लुकुमे

हउरते सय्यिदुना इाउके आ'उम ऱुसुय़ी अल्लु त़ाली अँनु 7 या 9 लुकुमों से क्रियादा ढाना नहीं ढाते थे.

(احياء العلوم ج 3 ص 111)

डिंतों के बदन पर तेल मल रहे थे

हउरते सय्यिदुना उमर इाउके आ'उम ऱुसुय़ी अल्लु त़ाली अँनु अेक मरतबा स-दके के डिंतों के बदन पर कतरान (या'नी तेल) मल रहे थे, अेक शप्स ने अर्ज की : हउरत ! येह काम क्रिसी गुलाम से करवा लेते ! जवाब दिया : मुज से बढ कर कौन गुलाम ढो सकता है, जो शप्स मुसल्मानों का वाली है वोह उन का गुलाम है.

(كُنُزُ الْعَمَال ج 5 ص 303 رقم 14303)

करमाने मुस्ताफा ﷺ : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा ठिक हुवा और उस ने मुज पर दुइइ शरीफ न पढा उस ने जइ की. (عبارت)

इरुके आ'उम का जन्ती महल

महबूबे रब्बुल इज्जत, रसूले रहमत, मालिके जन्नत
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बिशारत के मुताबिक उजरते सय्यिदुना इरुके
 आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अ-श-रओ मुभशरह में शामिल कर्छे जन्ती हैं
 युनान्ये उजरते सय्यिदुना ज़ाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ
 रिवायत करते हैं के महबूबे रहमान, नबिय्ये गैबदान, रसूले जीशान
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया : मैं जन्नत में गया, वहां मैं ने
 ओक महल देभा, ईस्तिफ़सार किया : (या'नी पूछा) येह महल किस का है ?
 इरिशते ने अर्ज की : उजरते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का. मैं ने याहा के अन्दर
 दाभिल हो कर उसे देभूं लेकिन (अै उमर रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ !) तुम्हारी गैरत याद
 आ गई. येह सुन कर उजरते सय्यिदुना उमर रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अर्ज करने
 लगे : या रसूलद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मेरे मां बाप आप
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कुरबान, क्या मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ
 पर गैरत कर सकता हूं ? (بخاری ج ۲ ص ۲۰۵ حدیث ۳۶۷۹) आ'ला उजरत
 इरमाते हैं :

لَا وَرَبِّ الْعَرْشِ जिस को जो मिला उन से मिला बटती है कौनेन में ने'मत रसूलद्लाह की
 पाक हो कर ईशक में आराम से सोना मिला ज़न की ईकसीर है उल्कत रसूलद्लाह की

पहले शे'र का मतलब है : अर्श आ'उम के पैदा करने वाले
 परवर दगार عَزَّ وَجَلَّ की कसम ! जिस किसी को जो कुछ मिला है हुजूरे
 अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पाक दर से मिला है, कयूके दोनों जहानों
 में रसूले करीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ ही का स-दका तकसीम हो रहा है.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा में क्रियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा। (क्रामात)

दूसरे शे'र के मा'ना हैं : एशके रसूल की आग में जल कर जाक होने वालों को (मरने के बा'द) यैन की नींद नसीब होती है क्यूंके रूह व जान के लिये मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मददमत एकसीर या'नी निहायत मुअस्सिर और मुफ़ीद दवा का द-रजा रभती है.

दुरा पडते ही जलजला जाता रहा

अक मर्तबा मदीनअे मुनव्वरह رَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में जलजला आ गया और जमीन जोर जोर से छिलने लगी. येह देखा कर करामत व अदालत की आ'ला मिसाल, साहिबे अ-ज-मतो जलाल, अभीरुल मुअमिनीन, उजरते सय्यिदुना उमर बिन ખताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जलाल में आ गअे और जमीन पर अक दुरा मार कर करमाने लगे : قَرِيءُ الْمِ أَعْدِلُ عَلَيْكَ (या'नी अै जमीन ! हहर ज़ कया में ने तेरे उपर अदूलो एन्साफ़ नहीं किया ?) आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का करमाने जलालत निशान सुनते ही जमीन साकिन हो गध (या'नी हहर गध) और जलजला ખत्म हो गया.

(طبقات الشافعية الكبرى للسبكي ج ٢ ص ٣٢٤)

भीठे भीठे एस्लामी लार्थयो ! देखा आप ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मकबूल बन्दों को कितनी ताकत और कुव्वत हासिल होती है और वोह किस कदर बुलन्दो बाला शान के हाभिल होते हैं. सय है के जो षुदा के हो ज़ते हैं षुदाई (या'नी हुन्या) उन की हो जाती है.

“ उमर झरुक ” के 8 हुरुक की निस्बत से
8 झ्राघले हजरते उमर ब जलाने महबूबे रब्बे अकबर

﴿ 1 ﴾ يا'नी उजरते उमर

करमाने मुस्तफ़ی رضی اللہ تعالیٰ عنہ و اللہ وسلم : मुठ पर दुइडे पक की कसरत करो बेशक येड तुम्हारे विये तडारत है. (अहमद)

(رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) से बेडतर किसी आडमी पर सूरज तुलूअ नहीं हुवा.

(ترمذی ج ۵ ص ۳۸۴ حدیث ۳۷۰۴)

तरजुमाने नभी डम जडाने नभी

जाने शाने अडालत पे लापों सलाम

(डडार्डे अफ़िशश शरीफ़)

﴿2﴾ आस्मान के तमाम फिरिशते डजरते उमर (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) की डज़ूत करते हैं और जमीन का डर शैतान डन के फौड से लरजता है (1)

﴿3﴾ या'नी (डजरते) अबू अक और (डजरते) उमर (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) से मोमिन मडूबत रपता है और

मुनाफ़िक डन से डुज रपता है (2) ﴿4﴾ يا'नी (डजरते) उमर (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) अडले जन्नत के थराग हैं. (3)

﴿5﴾ يا'नी येड (डजरते उमर (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) वोड

शप्स है जे बातिल को पसन्द नहीं करता (4) ﴿6﴾ "तुम्हारे पास अक जन्नती शप्स आगेगा." तो डजरते उमर (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) तशरीफ़ लाअे (5)

﴿7﴾ يا'नी अडलाड एَزَّ وَجَلَّ की रिजा डजरते उमर (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) की रिजा है और डजरते उमर

(رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) की रिजा अडलाड तआला की रिजा है (6)

﴿8﴾ يا'नी "अडलाड एَزَّ وَجَلَّ ने उमर (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) की जडान और डिल पर डक जारी करमाया." (7)

(1) تاريخ دمشق ج ۴۴ ص ۸۵ (2) ايضاً ص ۲۲ (3) مَجْمَعُ الرّواثِد ج ۹ ص ۷۷ حدیث ۱۴۴۶۱

(4) مُسْنَدُ إمام احمد ج ۵ ص ۳۰۲ حدیث ۱۰۵۸۵ (5) ترمذی ج ۵ ص ۳۸۸ حدیث ۳۷۱۴ جَمْعُ

الأجوامع للشيوطی ج ۴ ص ۳۶۸ حدیث ۱۲۵۰۶ (7) ترمذی ج ۵ ص ۳۸۳ حدیث ۳۷۰۲

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो के तुम्हारा दुरद मुज तक पढोयता है. (ज़रन)

मुफ़सिरे शहीर उकीमुल उम्मत उजरते मुफ़ती अहमद यार पान एहदीसे पाक (नम्बर 8) के तहत इरमाते हैं : या'नी एन के हिल में जो भयालात आते हैं वोड उक होते हैं और उभान से जो बोलते हैं वोड उक बोलते हैं. (भिरआत, जि. 8, स. 366)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हमें उजरते उमर से प्यार है

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! अल्लाहु रब्बुल आ-लमीन عزَّ وَجَلَّ ने उजरते सय्यिहुना उमर झरुके आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को आलीशान मर्तबा अता इरमाया और बहुत जियादा इज्जतो शराफ़त और इज़ीलतो करामत से नवाजा. आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की शाने रिफ़अत निशान को तस्लीम करना, आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को बरउक जान कर राडे छिदायत का रोशन मीनार समजना और आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मडुबत व अकीदत रभना निछायत जरूरी है जैसा के जलीलुल कद्र सहाबी उजरते सय्यिहुना अबू सईद जुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं के मडुबूबे रब्बे दो जहान, शाडे कौनो मकान, सरवरे जीशान صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने तवज्जोड निशान है : **يَا'नी जिस शप्स ने उजरते उमर (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) से बुज्ज रभा उस ने मुज से बुज्ज रभा और जिस ने उजरते उमर (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) से मडुबत की उस ने मुज से मडुबत की.**

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ ج ٥ ص ١٠٢ حديث ٦٧٢٦)

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! अल्लाह عزَّ وَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के प्यारे, आस्माने छिदायत के यमकते दमकते

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढा अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रडमते नाजिल इरमाता है. (इब्रान)

सितारे, दुषी दिल् के सडारे, गुलामाने मुस्तफ़ा की आंभों के तारे डउरते सय्यिदुना अबू हर्फस उमर बिन अत्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की शान और उन से महब्बत करने का ईन्आम आप ने मुला-डजा इरमाया के आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से महब्बत करना गोया रसूले पाक, साहिबे लौलाक, सय्याडे अइलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से महब्बत करना है और मَعَادُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से बुज्जो अदावत ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से बुज्जो अदावत के मु-तरादिक है, जिस का नतीजा दुन्या व आभिरत की जिल्लत व गुलालत है.

वोड उमर वोड डबीभे शडे डडरो डर वोड उमर आसअे डशिमी ताजवर
वोड उमर डुल गअे जिस डे रडमत के दर वोड उमर जिस के आ'दा डे शैदा सकर

उस डुदा दोस्त डउरत डे लाभों सलाम

जिस से महब्बत, उसी के साथ हशर

“बुभारी शरीफ़” की डदीसे पाक में है : आदुडे डारगाडे रिसालत डउरते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हें के किसी सडाभी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने रसूले रडमत, शकीअे रोअे कियामत, मुअ्बिरे अड्वाले दुन्या व आभिरत से पूछा के कियामत कड आअेगी ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : तुम ने इस के लिये क्या तय्यारी की है ? अरु की : या रसूलद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मेरे पास तो कोई अमल नही, सिवाअे इस के, के में अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से महब्बत करता हूं. सरवरे काअेनात, शाडे

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुइद शरीक न पढे तो वोह लोगों में से कजूस तरीन शअस है. (जिब्रिल)

मौजूदात, मडबूबे रब्बुल अर्दे वस्समावात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने करमाया : أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحَبَّتَ. तुम उसी के साथ होगे जिस से मडब्बत करते हो. उजरते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हैं के हमें किसी भबर ने एतना भुश नहीं किया जितना सुल्ताने दो जडान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के एस करमाने मडब्बत निशान ने किया के तुम उसी के साथ होगे जिस से मडब्बत करते हो. फिर उजरते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हैं : मैंं हुजूर नबिय्ये करीम, रउिकुर्रुहीम से मडब्बत करता हूं और उजरते अबू बक व उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से भी, लिडाजा उम्मीद वार हूं के एन की मडब्बत के बाईस एन उजरात के साथ होउगा अगर्ये मेरे आ'माल एन जैसे नहीं.

(بخاری ج ۲ ص ۲۷۰ حدیث ۳۶۸۸)

उम को शाडे भडरो बर से प्यार है **إِنْ شَاءَ اللهُ** अपना बेडा पार है

और अबू बको उमर से प्यार है

إِنْ شَاءَ اللهُ अपना बेडा पार है

अ-ज-मते सहाबा

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती एदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ 192 सईहात पर मुश्तमिल किताब "सवानेहे करबला" सईहा 31 पर उदीसे पाक मन्कूल है : उजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुगइइल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, मडबूबे रब्बुल एबाद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का करमाने उकीकत बुन्याद है : मेरे अस्हाब के उक में भुदा से उरो ! भुदा का भौक करो !! एन्हें मेरे बा'द निशाना न बनआओ,

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरदे पाक न पड़े. (हाम)

जिस ने एन्हें मडबूब रभा मेरी मडबूबत की वजह से मडबूब (या'नी प्यारा) रभा और जिस ने एन से बुगज किया उस ने मुज से बुगज किया, जिस ने एन्हें एजा दी उस ने मुजे एजा दी, जिस ने मुजे एजा दी बेशक उस ने अद्लाह तआला को एजा दी, जिस ने अद्लाह तआला को एजा दी करीब है के अद्लाह तआला उसे गिरिफ़तार करे.

(त्रिमंडी ०६ व ६१३ हदिथ ३८८८)

उम को अस्हाबे नबी से प्यार है **اِنْ اَبْنَا بِنَا اَبْنَا**

सदरुल अफ़जिल हजरते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नएमुदीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي इरमाते हैं : “मुसल्मान को याहिये के सहाबअे किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) का निहायत अदब रभे और हिल में उन की अकीदत व मडबूबत को जगह दे. उन की मडबूबत हुजूर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) की मडबूबत है और जो बढ नसीब सहाबअे किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की शान में बे अ-दबी के साथ जभान फोले वोह दुश्मने फुदा व रसूल है, मुसल्मान जैसे शप्स के पास न बैठे.” (सवानेह करबला, स. 31) मेरे आका आ'ला हजरत, एमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह एमाम अहमद रजा फान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इरमाते हैं :

अहले सुन्नत का है बेडा पार अस्हाबे हुजूर

नजम हैं और नाउ है एतरत रसूलुल्लाह की

(हदाएके बप्शिश)

एस शे'र का मतलब है के अहले सुन्नत का बेडा (या'नी कश्ती) पार है क्यूंके सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان एन के लिये सितारों की मानिन्ह और अहले बैते अत्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان कश्ती की तरह हैं.

करमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुइडे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होगे. (कोरान)

मुर्दा यीजने लगा, साथी भाग जडे हुओ

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 413 सफ़हात पर मुशतमिल किताब "उयूनुल खिदायात" हिस्सओ अव्वल सफ़हा 246 पर उजरते सय्यिहुना एमाम अब्दुर्रहमान बिन अली जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرِ तहरीर इरमाते हैं : उजरते सय्यिहुना अलफ़ बिन तमीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ इरमाते हैं के उजरते सय्यिहुना अबुल हुसैब अशीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِيرِ का अयान है के मैं तिज्जरत किया करता था और अद्लालु गफ़्फ़ार عَزَّ وَجَلَّ के इजलो करम से काई मालदार था. मुजे हर तरह की आसाईशें मुयस्सर थीं और मैं अकसर "ईरान" के शहरों में रहा करता था. अक मर्तबा मुजे मेरे मजदूर ने अताया के कुलां मुसाफ़िर जाने में अक लाश अे गोरु कइन पडी है, कोई दइनाने वाला नही. येह सुन कर मुजे उस मरने वाले की अे कसी पर तर्स आया और ढेर ढवाडी की निय्यत से तज्जीजो तकईन का ईन्तिजाम करने के लिये मैं मुसाफ़िर जाने पछोंया तो देभा के अक लाश पडी है जिस के पेट पर कय्यी ईंटें रपी हैं. मैं ने अक यादर उस पर उल दी, उस लाश के करीब उस के साथी ली बैठे थे. उन्हों ने मुजे अताया के येह शप्स अहुत ईबादत गुजार और निकूकार था, हमारे पास ईतनी रकम नही के हम इस की तज्जीजो तकईन का ईन्तिजाम कर सकें. येह सुन कर मैं ने उजरत पर अक शप्स को कइन लेने और दूसरे को कब्र ढाढने के लिये लेजा और हम लोग मिल कर उस की कब्र के लिये कय्यी ईंटें तय्यार करने और उसे गुस्ल देने के लिये पानी गर्म करने लगे. अभी हम ईन्हीं कामों में मशगूल थे के यकायक वोह मुर्दा उठ बैठा, ईंटें उस के पेट से गिर गईं

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज पर दुरद शरीफ़ पढो अल्लाह तुम पर रडमत भेजेगा. (अनसरी)

झर वोड बडी लयानक आवाज में थीबने लगा : डामे आग, डामे डलाकत, डामे बरबाडी ! डामे आग, डामे डलाकत, डामे बरबाडी ! उस के साथी येड भौङनाक मन्जर देभ कर वडं से भाग भडे हुअे. लेकिन मैं हिम्मत कर के उस के करीब गया और बाजू पकड कर उसे डिलाया और पूछा : तू कौन है और तेरा क्या मुआ-मला है ? वोड कडने लगा : “मैं कूङे का रिछाईशी था और बढ किस्मती से मुजे जैसे बुरे लोगों की सोडभत मिली जो डजरते सय्यिदुना सिदीके अकबर और डजरते सय्यिदुना झरुके आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को गालियां दिया करते थे. **مَعَادُ اللهِ عَزَّوَجَلَّ !** उन की बुरी सोडभत की वजह से मैं भी उन के साथ मिल कर शौभने करीमैन या'नी डजरते सय्यिदुना सिदीके अकबर और डजरते सय्यिदुना झरुके आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को गालियां देता और उन से नफ़रत करता था.” डजरते सय्यिदुना अबुल हुसैब बशीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْفَدِير इरमाते हैं : येड सुन कर मैं ने तौबा व इस्तिग़फ़ार की और उसे कडा : औ बढ भप्त ! झर तो तू वाकेई सप्त सजा का मुस्तडिक है लेकिन येड तो भता के तू भरने के भा'द जिन्दा कैसे डो गया ? तो वोड कडने लगा : मेरे नेक आ'माल ने मुजे कोई झअेदा न दिया. सडाभअे किराम رَضُواْ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ की गुस्तापी की वजह से मुजे भरने के भा'द घसीट कर जहन्नम की तरफ़ ले जाया गया और वडं मुजे मेरा ठिकाना दिभाया गया और कडा गया : “अभ तुजे दोबारा जिन्दा किया जाअेगा ताके तू अपने बढ अडीदा साथियों को अपने दईनाक अन्जाम की भबर दे और उन्हें भताअे के अल्लाहु गफ़इर عَزَّوَجَلَّ के नेक भन्टों से दुश्मनी रभने वाला आभिरत में किस कदर दईनाक अजाब का मुस्तडिक है. जब तू

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و الله وسلم : मुज पर कसरत से दुरुदे पाक पढे बेशक तुम्हारा मुज पर दुरुदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मङ्क़िरत है. (मू० ५)

उन को अपने बारे में बता चुकेगा तो तुझे दोबारा तेरे अस्ली ठिकाने (या'नी जहन्नम) में डाल दिया जायेगा." अस ! यह खबर देने के लिये मुझे दोबारा जिन्दा किया गया है ताके मेरी इस इब्रत नाक डालत से गुस्ताखाने सहाबा इब्रत हासिल करें और अपनी गुस्ताखियों से बाज आ जायें वरना जो इन हज़रते कुदसिय्या عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शाने अ-उमत निशान में गुस्ताफी करेगा उस का अन्जाम भी मेरी तरफ़ होगा. इतना कहने के बाद वोड शप्स दोबारा मुर्दा डालत में हो गया. इतनी देर में कब्र खोदी जा चुकी थी और कफ़न का इन्तिजाम भी हो चुका था लेकिन मैं ने कहा : मैं जैसे बढ भप्त की तज्जीजो तक़्ज़ीन हरगिज नहीं करूंगा जो शैबेने करीमैन (या'नी हज़रते सय्यिदुना सिदीके अकबर और हज़रते सय्यिदुना इरुके आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) का गुस्ताफ़ हो और मैं तो इस के पास ठहरना भी गवारा नहीं करता. यह कह कर मैं वहां से वापस से चल दिया. बाद में मुझे किसी ने खबर दी के उस के बढ अकीदा साथियों ने ही उस को गुस्ल दिया और नमाजे जनाजा पढी. उन के इलावा किसी ने भी नमाजे जनाजा में शिकत न की. हज़रते सय्यिदुना खलफ़ बिन तमीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَظِيمِ इरमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबुल हुसैब बशीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير से पूछा : क्या आप इस वाकिअे के वक्त वहां मौजूद थे ? उन्होंने जवाब दिया : ज़ हां ! मैं ने अपनी आंभों से उस बढ भप्त को दोबारा जिन्दा होते देखा और अपने कानों से उस की बातें सुनीं. यह वाकिआ सुन कर हज़रते सय्यिदुना खलफ़ बिन तमीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَظِيم ने इरमाया : अब मैं गुस्ताखाने सहाबा के इस इब्रत नाक अन्जाम की खबर लोगों को उरूर दूंगा ताके वोड इब्रत पकड़ें और अपनी आक़िबत की इक़ करें.

करमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जो मुज पर अक दुइद शरीफ़ पढता है अद्लाह उंस के लिये अक कीरात अज्र लिखता है और कीरात उलुद पडाउ जितना है. (मुरात)

रब्बुल अनाम एमै सलाबअे किराम रِضْوَانِ كِي शाने अ-जमत निशान में गुस्ताफी व बे अ-दबी से मडकूज रभे और तमाम सलाबअे किराम रِضْوَانِ كِي सखी मडबबत और उन की पूब पूब ता'जीम करने की सआदत ँनायत इरमाअे. अद्लाहु रहमान गुस्ताफीं से इमेशा मडकूजो मामून रभे और इम से कभी अदना सी गुस्ताफी भी सरजद न डो.

मडकूज सदा रभना पुढा बे अ-दबीं से
और मुज से भी सरजद न कभी बे अ-दबी डो

(वसाँले बफ़िश, स. 193)

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अद्लाह उंज की कसम ! गुस्ताफीं का अ-जम बडा ददनाक व ँब्रत नाक डोता है. अैसे ना मुराद जमाने तर के लिये ँब्रत का सामान बन जाते हैं. जो अद्लाह व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पाक बारगाडों में ना जैबा कलिमात कडते या सलाबअे किराम व औलिया उजाम रِضْوَانِ كِي मुबारक शानों में मुजपरफ़ात (या'नी गालियां) बकते हैं आबिरत में तो तबाही व बरबाही उन का मुकदर उइर बनेगी मगर वोड दुन्या में भी जलीलो रुस्वा डो कर जमाने तर के लिये निशाने ँब्रत बन जाते हैं और डकीकी मुसल्मान कभी भी उन के अकाँदो आ'माल की पैरवी नहीं करते. अद्लाह उंज इमें इमेशा बा अदब रहने और बा अदब लोगों या'नी आशिकाने रसूल की सोडबत ँप्तिथार करने की तौईके रईक मडमत इरमाअे और बे

करमाने मुस्तफ़ा, صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुअ पर इरुके पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रड़ेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिस्कार करते रड़ेंगे. (अरुां)

अ-दुओं और गुस्ताओं की सोडुत से उमारी लिफ़ाउत इरमाओ.

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

از خدا بگوئیم توفیق ادب بے ادب محروم گشت از فضل رب

(या'नी अपने रब एरु वंजु से तौईके अदु तलु करु, वे अदु इउले रब से मडुम इरता है)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इरुके आ'उम के मु-तअल्लिक अकीदओ अदले सुन्नत

उउरते सखियदुना उमर इरुके आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के मु-तअल्लिक अदले सुन्नत व जमाअत का अकीदा जानना उरुी है युनान्ये दौवते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सइहात पर मुशतमिल किताब “अदारे शरीअत” जिल्द अल्लल सइहा 241 पर है : “बा'द अम्बिया व मुर-सलीन (عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ), तमाम मप्लूकते ईलाही ईन्सु जिन व मलक (या'नी फिरिश्तुं) से अइउल सिदीके अकअर हैं, इर उमर इरुके आ'उम, इर उस्माने गनी, इर मौला अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ, जो शप्स मौला अली से अइउल अताओ गुमराड, अद मउडु है.” (अदारे शरीअत)

सडुआ में है अइउल उउरते सिदीक का रुत्बा

है उन के बा'द आ'ला मर्तबा इरुके आ'उम का

दौवते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना के मत्बूआ तरजमे वाले पाकीजा कुरआन, “क-उल ईमान मअ अउाईनुल ईरइान” सइहा 974 पर अल्लाडुल मज्द एरु वंजु सू-रतुल उदीद पारड 27, आयत नम्बर 29 में ईशाद इरमाता है :

करमाने मुस्तफ़ा : حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार हुइते पाक पढा अल्लाह उस पर दस रउमतें बेजता है. (स्)

وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ
مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ①

तर-ज-मअे क-जुल ईमान : और येह के इजल अल्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) के हाथ है, देता है जिसे याहे और अल्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) अडे इजल वाला है.

अद मज़हबियत से नइरत

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 561 सइहात पर मुशतमिल किताब, "मदकूजाते आ'ला उजरत" सइहा 302 पर है : उजरते उमर झरुके आ'उम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नमाजे मगरिब पढ कर मस्जिद से तशरीफ़ लाअे थे के अक शाप्स ने आवाज दी : कौन है के मुसाफ़िर को ढाना दे ? अभीरुल मुअमिनीन (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने ढादिम से ईशादि करमाया : ईसे उमराह ले आओ. वोह आया (तो) उसे ढाना मंगा कर दिया. मुसाफ़िर ने ढाना शुइअ ही किया था के अक लइज उस की जढान से अैसा निकला जिस से "अद मज़हबी की बू" आती थी, झौरन ढाना सामने से उठवा लिया और उसे निकाल दिया.

(كَنْزُ الْعَمَالِ ج ١٠ ص ١١٧ رقم ٢٩٣٨٤)

झरुके उक्को बातिल ईमामुल हुदा

तैगे मरवूले शिदत पे लाढों सलाम

(हदाईके अमिशश शरीफ़)

आ'ला उजरत رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ के ईस शे'र का मतलब है : उजरते सय्यिदुना झरुके आ'उम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ उक्को बातिल में इर्क करने वाले, हिदायत के ईमाम और ईस्लाम की हिमायत में सप्तती से जुलन्द की हुई तलवार की तरह हैं, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ पर लाढों सलाम हों.

झरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ज़ो शफ़्स मुज पर दुरुदे पाक पठना भूल गया वोड जनत का रास्ता भूल गया. (طرقي)

बद मज़हबों के पास बैठना हराम है

“मद़्ज़ाते आ’ला उज़रत” सफ़़हा 277 पर ए’मामे अडले सुन्नत

سَيِّدِ الرَّحْمَةِ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से बद मज़हबों के पास बैठने का हुक़म पूछा गया तो ए’शरहि़ झरमाया : “(बद मज़हबों के पास बैठना) हराम है और बद मज़हब डो जाने का अन्देशा कामिल और दोस्ताना डो तो दीन के लिये उडरे कातिल.” रसूलुद्लाड صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ झरमाते हैं :

يَا نَبِيَّ أُمَّ الْيَهُودِ لَا يُضَاؤُنَكُمْ وَلَا يَفْتُنُونَكُمْ كَرُوا وَأَنْ يَكُونَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَكُمْ وَلا تَدْخُلُوا عَلَيْهِمْ مِنْ دِئَرِهِمْ حَتَّى يَأْتِيَ بَعْضُكُم مِّنْهُمْ فَفِرُوا مِنْهُمْ إِنَّهُمْ كَافِرُونَ (مقدمة صحيح مسلم حديث 7 ص 9) और अपने नफ़स पर ए’तिमाद करने वाला (आदमी) बडे कज़़ाब (या’नी बडुत डी बडे जूटे) पर ए’तिमाद करता है,

إِنَّهَا أَكْذَبُ شَيْءٍ إِذَا خَلَفَتْ فَكَيْفَ إِذَا وَعَدَتْ (नफ़स अगर को’ई बात कसम प्या कर कडे तो सब से बढ कर जूटा है न के जव भावी वा’दा करे) सडीड उदीस में झरमाया : जब दज्जाल निकलेगा, कुछ (अफ़राद) उसे तमाशे के तौर पर देपने ज़ाअेंगे के डम तो अपने दीन पर मुस्तकीम (या’नी का’थम) हैं, डमें एस से क्या नुक्सान डोगा ? वडों (या’नी दज्जाल के पास) ज़ा कर वैसे डी डो ज़ाअेंगे. (अबुदावुद 4 व 107 حديث 4319) उदीस में है, नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने झरमाया : ज़ो ज़िस कौम से दोस्ती रभता है उस का डशर उसी के साथ डोगा. (19 حديث 6450)

आका ने अपने मुस्ताक डो सीने से लगा लिया

भीडे भीडे ए’स्लामी भा’थयो ! भौड़े भुदा عَزَّ وَجَلَّ व ए’शके मुस्तफ़ा

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पाने, दिल में सडाबअे किराम व औलियाअे

करमाने मुस्तफ़ा حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुइदे पाक न पढा तहकीक वोह बह भुप्त हो गया. (उरु)

उउम عَلَيْهِمُ أَجْمَعِينَ की महभत जगाने, नेक सोहभतो से कैउ उठाने, नमाजों और सुन्नतो की आहत बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, आशिकाने रसूल के म-दनी काइलो में सुन्नतो की तरबियत के लिये सफ़र इप्तियार कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुजारने और अपनी आभिरत संवारने के लिये रोजाना "इके मदीना" के जरीअे म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह के इप्तिदाई 10 दिन के अन्हर अन्हर अपने यहां के जिम्मेदार को जम्ह करवाने का मा'मूल बना लीजिये. इफ़तावार सुन्नतो भरे इजतिमाअ में शिकत कीजिये और दा'वते इस्लामी के हर दिल अजीउ म-दनी येनल के सिव्सिले देभते रहिये. اِنَّا لِلّٰهِ اَعْرَضْنَا आप अपने दिल में अल्लाह اَعْرَضْنَا के मुकर्रधीन व साविहीन की महभत को दिन ब दिन बढता हुवा महसूस इरमाअेंगे, अल्लाह اَعْرَضْنَا के इजलो करम से इन नुइसे कुदसिय्या का कैजान और इन की नजरे शकत शामिले डाल होगी. तरगीब के लिये अेक म-दनी बहार पेश की जाती है युनान्ये सना प्वाने रसूले मकबूल, बुलबुले रौजअे रसूल, मदाहे सहाबा व आले बुतूल, गुलजारे अत्तार के मुशकबार इल, मुबद्लिगे दा'वते इस्लामी अलहाज अबू उबैद कारी हाज्ज मुश्ताक अहमद अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي की वफ़ात से यन्ह माह कब्ल मुजे (सगे मदीना غِيَّه को) किसी इस्लामी भाई ने अेक मक्तूब इरसाल किया था, उस में उन्हों ने ब कसम अपना वाकिआ कुइ यू तहरीर किया था : मैं ने प्वाब में अपने आप को सुनहरी जालियों के उ-भउ पाया, जाली मुबारक

झरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुज पर अक बार दुडुडे पाक पढा अदलाल उस पर दस रडमते भेजता है. (५)

में बने हुअे तीन³ सूराम में से अक सूराम में जब जंका तो अक दलरुभा मन्जर नजर आया, क्या देभता हूं के सरकारे मदीना, राडते कल्भो सीना, कैज गन्जना, साहिबे मुअतरर पसीना. صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ इरमा हैं और साथ ही शैभैने करीमैन या'नी उजरते सय्यिहुना अबू बक सिदीक और उजरते सय्यिहुना उमर झडके आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا भी डाजिरे भिदमत हैं. एतने में डाज्ज मुश्ताक अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي بِأَرْوَاحِهِمْ أجمعين भारगाडे मडभूबे भारी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में डाजिर हुअे सरकारे आदी वकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने डाज्ज मुश्ताक अत्तारी को सीने से लगा लिया और फिर कुएँ एशाद इरमाया मगर वोह मुजे याद नहीं फिर आंभ भुल गए.

आप के कदमों से लग कर मौत की या मुस्तफ़ा

आरजू कब आयेगी भर बे कसो मजबूर की

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

उमर की मौत पर इस्लाम रोअेगा

अदलाल उरुके मडभूब, दानाअे गुयूब, मुज्जहुन अनिल उयूब

ﷺ ने इरमाया : मुजे जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने कडा हे के

इस्लाम उमर की मौत पर रोअेगा.

(حلية الاولياء 2 ج ص 170)

म-रजुल विसाल में भी नेडी की दा'वत

अमीरुल मुअमिनीन, उजरते सय्यिहुना उमर बिन ખत्ताब

ﷺ पर जब कातिलाना इम्ला हुवा तो अक नौ जवान तसद्वी

देने के लिये आप ﷺ की भिदमत में डाजिर हुवा और कडा :

अै अमीरुल मुअमिनीन ! अदलाल की तरफ़ से आप को भिशारत डो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज़ पर दुड़के पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

क्यूंके आप को रसूलुद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सोहबत और ईस्लाम में सबकत नसीब हुई, जैसा के आप को मा'लूम है और जब खलीफ़ा बनाये गये तो अद्दलो ईन्साफ़ किया फिर आप शहीद होने वाले हैं. आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं याहता हूँ के येह उमूर मेरे लिये बराबर बराबर हो जायें, न मुज़ पर किसी का हक निकले न मेरा किसी पर.” जब वोह शप्स जाने लगा तो उस की यादर जमीन को धूर रही थी, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : उस को मेरे पास लाओ. जब वोह आ गया तो फ़रमाया : औं भतीजे ! अपने कपडे को ठीपर कर ले येह तेरे कपडे को ज़ियादा साफ़ रभेगा और येह अद्लाह को भी पसन्द है.

(بخاری ج ۲ ص ۵۳۲ حدیث ۳۷۰۰)

शहीद ज़म्मी हालत में नमाज़

जब हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ाड़के आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ पर कातिलाना हम्ला हुवा तो अर्ज़ की गई : औं अमीरुल मुअमिनीन ! नमाज़ (का वक्त है). फ़रमाया : ओ हां, सुनिये ! “जो शप्स नमाज़ जायेअ करता है उस का ईस्लाम में कोई हिस्सा नहीं.” और हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ाड़के आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने शहीद ज़म्मी होने के बाद पुजूद नमाज़ अदा फ़रमाई.

(کتابُ الْکَبَائِرِ ص ۲۲)

कब्र में जदन सलामत

“बुभारी शरीफ़” में है : हज़रते उर्वह बिन जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है के खलीफ़ा वलीद बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में जब रौज़अे मुनव्वरह की दीवार गिरी तो लोग उस को बनाने लगे, (बुन्याद

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ठिक डुवा और उस ने मुज पर दुइइ शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (مبارزين)

षोदते वक्त) अेक पाँउ आडिर डुवा तो सब लोग धबरा गरभे और लोगोँ ने गुमान येड किया के येड रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का कदम मुबारक है और कोई अैसा शप्स न मिला जो उसे पडयान सकता तो डउरते उर्वड बिन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا सुभैर ने कडा :
لَا، وَاللَّهِ! مَا هِيَ قَدَمُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، مَا هِيَ إِلَّا قَدَمُ عَمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ.
या'नी पुढा की कसम ! येड डुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का कदम शरीफ़ नहीँ है बल्के येड डउरते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का कदम मुबारक है.

(بخارى شريف ج ١ ص ٤٦٩ حديث ١٣٩٠)

जभीं मैली नहीँ डोती दहन मैला नहीँ डोता
गुलामाने मुहम्मद का कफ़न मैला नहीँ डोता
صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّد

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! बयान को ईप्तिताम की तरफ़ लाते डुअे सुन्नत की इजीलत और यन्द सुन्नतेँ और आदाब बयान करने की सआदत डसिल करता हूँ. ताजदारे रिसालत, शहन्शाडे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रडमत, शम्भे बजमे डिदायत, नोशअे बजमे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मडुबत की उस ने मुज से मडुबत की और जिस ने मुज से मडुबत की वोड जन्नत में मेरे साथ डोगा.
(ابن عساکر ج ٩ ص ٣٤٣)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आका
जन्नत में पडोसी मुजे तुम अपना बनाना
صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّد

इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुँह पर रोज़े जुमुआ दुइद शरीफ़ पढेगा में कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा. (क़ुरआन)

“करम या रसूलव्लाह” के तेरह दुइद की निस्तमत से पानी पीने के 13 म-दनी फूल

❁ 1) ओंट की तरह ओक ही सांस में मत पियो, बल्के दौ या तीन मर्तबा (सांस ले कर) पियो और पीने से कबल **بِسْمِ اللَّهِ** पढो और इरागत पर **اَللّٰهُمَّ** कडा करो (1) **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** नबिय्ये अकरम (2) **تِرْمِذِي ج 3 ص 302** (3) **حَدِيث 1892** ने भरतन में सांस लेने या उस में झूंकने से मन्अ इरमाया है. (4) **ابوداؤد ج 3 ص 474** **حَدِيث 3728** मुइस्सिरे शहीर डकीमुल उम्मत डजरते मुइती अडमद यार ખान **رَحْمَةُ الْحَنَّانِ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** इस हदीसे पाक के तहत इरमाते हैं : भरतन में सांस लेना जानवरों का काम है नीज सांस कभी जहरीली होती है इस लिये भरतन से अलग मुँह कर के सांस लो, (या'नी सांस लेते वक्त गिलास मुँह से हटा लो) गर्म दूध या याय को झूँकों से ठन्डा न करो बल्के कुछ ठहरो, कदरे ठन्डी हो जाओ इर पियो. (मिरआत, जि. 6, स. 77) अलबता दुइद पाक वगैरा पढ कर न नय्यते शिफ़ा पानी पर दम करने में इरज नहीं. ❁ पीने से पहले **بِسْمِ اللَّهِ** पढ लीजिये ❁ यूस कर छोटे छोटे घूंट पियें, बडे बडे घूंट पीने से जिगर (**LEAVER**) की बीमारी पैदा होती है ❁ पानी तीन सांस में पियें ❁ बैठ कर और सीधे हाथ से पानी नोश कीजिये ❁ लोटे वगैरा से वुजू किया हो तो उस का बया हुवा पानी पीना 70 मरज से शिफ़ा है के येड आबे जमजम शरीफ़ की मुशा-अहत रખता है, इन दौ (या'नी वुजू का बया हुवा पानी और जमजम शरीफ़) के धलावा कोई सा ली पानी जडे जडे पीना मकरुह है. (माभूज अज : इतावा र-अविख्या, जि. 4, स. 575, जि. 21, स. 669) येड दौनों पानी किब्ला रु

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुज पर दुइडे पाक की कसरत करो बेशक येड तुम्हारे लिये तदारत है. (अबुल)

हो कर अडे अडे पिये ❀ पीने से पहले देअ लीजिये के पीने की शै में कोई नुकसान देड थीअ वगैरा तो नहीं है (०१६ व ०) (إتحاف السادة للزبيدي ج ० ص ०१६)

❀ पी युक्ने के आ'द الْحَمْدُ لِلَّهِ कहिये ❀ हुजुतुल ईस्लाम हजरते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली के आबिर में आहिरे में الْحَمْدُ لِلَّهِ दूसरे के आ'द الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ और तीसरे सांस के आ'द الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढे (احياء العلوم ج २ ص ८)

❀ गिलास में अये हुअे मुसल्मान के साइ सुथरे जूटे पानी को काबिले ईस्ति'माल होने के आ वुजूद प्वाल म प्वाल ईंकना न याहिये ❀ मन्कूल है : سُؤْرُ الْمُؤْمِنِ شِفَاءٌ يا'नी मुसल्मान के जूटे में शिफा है (الفتاوى الفقهية الكبرى لابن حجر الهيتمي ج ६ ص ११७، كشف الخفاء ج १ ص ३८६)

❀ पी लेने के अन्द लम्हों के आ'द प्वाली गिलास को देभेंगे तो उस की दीवारों से अह कर अन्द कतरे पेंडे में जम्अ हो युके होंगे उन्हें ली पी लीजिये.

हजारों सुन्नतें सीअने के लिये मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ हो कुतुअ (1) 312 सइहात पर मुश्तमिल किताअ "अहारे शरीअत" हिससा 16 और (2) 120 सइहात की किताअ "सुन्नतें और आदाअ" हदिय्यतन हासिल कीजिये और पढिये. सुन्नतों की तरबिय्यत का अेक बेहतरीन जरीआ दा'वते ईस्लामी के म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों लरा सइर ली है.

बूटने रहमतें काइले में यलो सीअने सुन्नतें काइले में यलो
होंगी हल मुश्किलें काइले में यलो अन्म हों शामतें काइले में यलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इरमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَيْرُ إِلَهِ وَاسْتَعِينُوا بِحَبْلِ الْجَزَالِ : तुम जहां भी हो मुज पर हुइद पढो के तुम्हारा हुइद मुज तक पछोयता है. (ज़िन)

अेक युप सो¹⁰⁰ सुभ

गमे मदीना, बकीअ,
मग़ि़रत और बे
हिसाब जन्नतुल
किरदौस में आका
के पडोस का तालिब



20 जुल हिज्जतिल हराम 1435 सि.हि.
06-11-2012

येह रिसाला पढ कर हूररे को दे दीजिये

शादी गमी की तकरीबात, ईजतिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाअेअ कर्दा रसाईल और म-दनी इलो पर मुशतमिल पेम्फ्लेट तकसीम कर के सवाब कमाईये, गाइको को ब नित्यते सवाब तोइके में देने के लिये अपनी हुकानों पर भी रसाईल रबने का मा'भूल बनाईये, अफ़्फ़ार इरोशों या बग़्यों के जरीअे अपने मइदले के घर घर में माइलाना कम अउ कम अेक अदद सुन्नतों त्भरा रिसाला या म-दनी इलो का पेम्फ्लेट पछोया कर नेकी की दा'वत की धूमें मयाईये और भूब सवाब कमाईये.

पुढा के इज़्ल से में हूं गढा इरुके आ'उम का

(19 शव्वालुल मुकर्रम 1433 सि.हि. ब मुताबिक 6-09-2012)

पुढा के इज़्ल से में हूं गढा इरुके आ'उम का
करम अल्लाह का हर दम नबी की मुज पे रहमत है
पसे सिदीके अकबर मुस्तफ़ा के सब सहाबा में
गली से उन की शैतां हुम दबा कर त्भाग जाता है
सहाबा और अइले बैत की हिल में मइलभत है
रहे तेरी अता से या पुढा ! तेरी ईनायत से
भटक सकता नहीं हरगिज़ कभी वोइ सीधे रस्ते से
पुढा की पास रहमत से मुहम्मद की ईनायत से
सदा आंसू बहाअे ज़ो गमे ईशके मुहम्मद में
मुजे डज्जो ज़ियारत की सआदत अब ईनायत हो
ईलाही ! अेक मुदत से मेरी आंभें पियासी हैं

पुढा उन का मुहम्मद मुस्तफ़ा इरुके आ'उम का
मुजे है दो जहां में आसरा इरुके आ'उम का
है बेशक सब से गिया मर्तबा इरुके आ'उम का
है अैसा रो'ब अैसा दब-दबा इरुके आ'उम का
ब ईजाने रज़ा में हूं गढा इरुके आ'उम का
हमारे हाथ में दामन सदा इरुके आ'उम का
करम जिस बपत्त वर पर हो गया इरुके आ'उम का
जहन्नम में न ज़अेगा गढा इरुके आ'उम का
दे अैसी आंभ या रब ! वासिता इरुके आ'उम का
वसीला पेश करता हूं पुढा इरुके आ'उम का
दिया दे सब्ज गुम्बद वासिता इरुके आ'उम का

शहादत अै पुढा अत्तार को दे दे मदीने में
करम इरमा ईलाही ! वासिता इरुके आ'उम का

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جِس نے مُؤج پر دس مرتباً دُرُودِ پاک پढا اَدَلّا اَدُّوَعْلُ اِيسِ پَر سَوِ رَحْمَتِ نَاجِلِ كَرَامَاتِ هِيَ. (مُحَبَّب)

ફેહરિસ

ઉન્વાન	સંકેધ	ઉન્વાન	સંકેધ
દુરૂદે પાક કી ફઝીલત	1	જહન્નમ કો બ કસરત યાદ કરો	23
સદાએ ફારૂકી ઓર મુસલ્માનોં કી ફતહ યાબી	2	લોગોં કી ઇજાઝત સે બૈતુલ માલ સે શહૂદ લેના	24
સય્યિદુના ઉમર ફારૂકે આ'ઝમ કા તઆરુફ	5	મુસલ્સલ રોઝે રખતે	24
કુર્બે ખાસ	7	સાત યા નવ લુકમે	24
સાહિબે કરામાત	7	ઊંઠોં કે બદન પર તેલ મલ રહે થે	24
કરામત હક હૈ	8	ફારૂકે આ'ઝમ કા જન્નતી મહલ	25
કરામત કી તા'રીફ	8	દુર્રા પડતે હી ઝલઝલા જાતા રહા	26
અફઝલુલ ઔલિયા	9	8ફઝાઈલે હઝરતે ઉમર બઝબાને મહબૂબે રબ્બે અકબર	26
દરિયાએ નીલ કે નામ ખત	10	હમં હઝરતે ઉમર સે પ્યાર હૈ	28
ના જાઈઝ રસ્મો રવાજ ઓર મુસલ્માનોં કી હાલતે ઝાર	12	જિસ સે મહબબત, ઉસી કે સાથ હશર	29
3 બીમારિયાં	14	અ-ઝ-મતે સહાબા	30
મઝકૂરા બીમારિયોં કા ઇલાજ	15	મુદર્દા ચીખને લગા, સાથી ભાગ ખડે હુએ	32
કબ્ર વાલે સે ગુફત-ગૂ	17	ફારૂકે આ'ઝમ કે મુતઅલ્લિક અકીદએ અહલે સુન્નત	36
સાયએ અર્શ પાને વાલે ખુશ નસીબ	18	બદ મઝહબિય્યત સે નફરત	37
અયાનક દો શેર આ પહોંચે	19	બદ મઝહબોં કે પાસ બૈઠના હરામ હૈ	38
ઘર વાલોં કો તહજજુદ કે લિયે જગાતે	20	આકા ને અપને મુશ્તાક કો સીને સે લગા લિયા	38
મહબૂબે ફારૂકે આ'ઝમ	21	ઉમર કી મૌત પર ઈસ્લામ રોએગા	40
શહૂદ કા પિયાલા	21	મ-રઝુલ વિસાલ મેં ભી નેકી કી દા'વત	40
ફાની દુન્યા કા નુક્સાન બરદાશ્ત કર લિયા કરો	21	શદીદ ઝખ્મી હાલત મેં નમાઝ	41
ફારૂકે આ'ઝમ કા રોના	22	કબ્ર મેં બદન સલામત	41
ખુદ કો અઝાબ સે ડરાને કા અનોખા તરીકા	23	પાની પીને કે 13 મ-દની ફૂલ	43
બકરી કા બચ્ચા ભી મર ગયા તો....	23	ખુદા કે ફઝૂલ સે મેં હૂં ગદા ફારૂકે આ'ઝમ કા	45

करमाने मुस्ताफा: صلى الله تعالى عليه و آله وسلم जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोड मुज पर दुइए शरीक न पडे तो वोड लोगो में से कसूस तरीन शास्य है. (तर्जुमे)

रामाخذومराज

कताब	मطبوع	कताब	मطبوع
قران مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	الطہقات الکبری	دارالکتب العلمیہ بیروت
تفسیر کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	مناقب عمر بن الخطاب	دار ابن خلدون
بخاری	دارالکتب العلمیہ بیروت	تاریخ دمشق	دار الفکر بیروت
صحیح مسلم	دار ابن حزم بیروت	تاریخ الخلفاء	باب المدینہ کراچی
ابوداؤد	دار احیاء التراث العربی بیروت	الریاض النضرۃ	دارالکتب العلمیہ بیروت
ترمذی	دار الفکر بیروت	حجۃ اللہ علی العالمین	مرکز الہدایت برکات رضا ہند
موطا امام مالک	دار المعرفۃ بیروت	الزهد لامام احمد	دار الغد الجدید مصر
مشکاۃ المصابیح	دارالکتب العلمیہ بیروت	الزهد لابن المبارک	دارالکتب العلمیہ بیروت
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
مصنف ابن ابی شیبہ	دار الفکر بیروت	اتحاف السادۃ	دارالکتب العلمیہ بیروت
معجم اوسط	دارالکتب العلمیہ بیروت	کتاب الکبائر	پشاور
مجموع الروائد	دار الفکر بیروت	الخطبۃ	دارالکتب العلمیہ بیروت
مجموع الجوامع	دارالکتب العلمیہ بیروت	عیون الحکایات	دارالکتب العلمیہ بیروت
کنز العمال	دارالکتب العلمیہ بیروت	القناتوی القبریۃ الکبری	دارالکتب العلمیہ بیروت
کشف الخفاء	دارالکتب العلمیہ بیروت	فتاویٰ رضویہ	رضافاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مرآۃ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور	سوانح کربلا	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
حلیۃ الاولیاء	دارالکتب العلمیہ بیروت	اسلامی زندگی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
دلائل النبوة	دارالکتب العلمیہ بیروت	کرامات صحابہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

सुन्नत की बहारें

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَسَلَّمَ

ईस्लामी के महके महके म-दनी माहोव में ब कसरत सुन्नतों सीधी और सिपाई ज़ती हैं, हर जुमा'रात ईशा की नमाज के बाद आप के शहर में खोने वाले द्वा'वते ईस्लामी के हक़तावार सुन्नतों परे ईजतिमाअ में रिज़ाअे ईवाही के विषे अख़री अख़री निय्यतों के साथ सारी रात गुज़रने की म-दनी ईख़िअ है. आशिकाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िख़ों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के विषे सकर और रोज़ना किंके मदीना के ज़रीअे म-दनी ईन्आमात आ रिआवा पुर कर के हर म-दनी माह के ईख़िदरई हस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहाँ के जिम्मेदार ओ ज़अ करवाने आ मा'मूल बना लीजिये, اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَسَلَّمَ से पाअन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नकरत करने और ईमान की तिक़ाजत के विषे कुदने आ जेह्दुन बननेगा.

हर ईस्लामी भाई अपना येस जेह्दुन बनाअे के "मुझे अपनी और सारी दुन्या के खोर्गों की ईस्वाह की कोशिश करनी है. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَسَلَّمَ" अपनी ईस्वाह की कोशिश के विषे "म-दनी ईन्आमात" पर अमव और सारी दुन्या के खोर्गों की ईस्वाह की कोशिश के विषे "म-दनी क़ाफ़िख़ों" में सकर करना है. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَسَلَّمَ



मक-त-अतुल मदीना

द्वा'वते ईस्लामी

सुन्नत की बहारें

﴿مَنْ أَحْسَنَ إِلَىٰ النَّاسِ وَأَمَّا اللَّهُ﴾ तब्दीये कुरआनो सुन्नत की आवमगीर गैर सियासी तहरीक हा'वते ईस्लामी के मसके मसके म-दनी माहोव में ब कसरत सुन्नतों सीधी और सिबाई ज़ती हैं, हर जुमा'रात ईशा की नमाज के बाद आप के शहर में खोने वाले हा'वते ईस्लामी के हकतावार सुन्नतों परे ईजतिमाज में रिज़ाओ ईवाही के विषे अखरी अखरी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़रने की म-दनी ईखिज़ है. आशिकाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िखों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के विषे सकर और रोज़ना किंके मदीना के जरीओ म-दनी ईन्आमात का रिखावा पुर कर के हर म-दनी माह के ईखिदरई हस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहाँ के रिम्मेदार ओ ज़म्म करवाने का मा'मूल बना लीजिये, ﴿مَنْ أَحْسَنَ إِلَىٰ النَّاسِ وَأَمَّا اللَّهُ﴾ ईस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की रिफ़ाजत के विषे कुदने का ज़ेह्न बनेगा.

हर ईस्लामी भाई अपना येस ज़ेह्न बनाओ के "मुझे अपनी और सारी दुन्या के खोगों की ईस्वाह की कोशिश करनी है. ﴿مَنْ أَحْسَنَ إِلَىٰ النَّاسِ وَأَمَّا اللَّهُ﴾ अपनी ईस्वाह की कोशिश के विषे "म-दनी ईन्आमात" पर अमब और सारी दुन्या के खोगों की ईस्वाह की कोशिश के विषे "म-दनी क़ाफ़िखों" में सकर करना है. ﴿مَنْ أَحْسَنَ إِلَىٰ النَّاسِ وَأَمَّا اللَّهُ﴾



मक-त-अतुल मदीना

हा'वते ईस्लामी